राष्ट्रीय छात्रशक्ति

वर्ष 34 अंक 6 अगस्त 2012 नई दिल्ली मूल्य 5 रु. पृष्ठ 32

असम हिंसा के खिलाफ अभाविप का प्रदर्शन

छात्र सम्मेलन, पटना

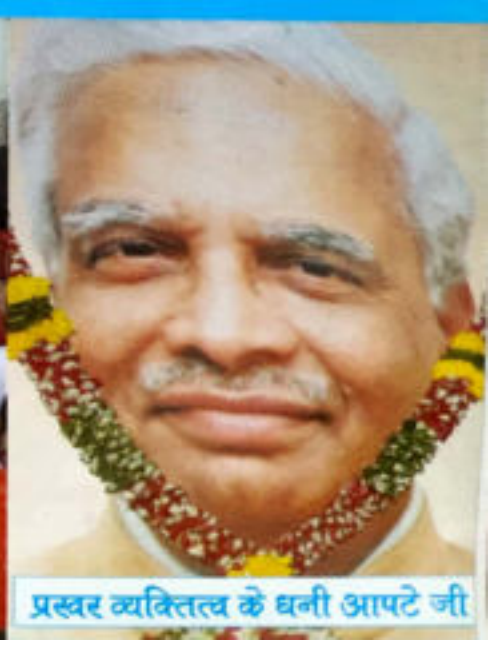
प्रखर व्यक्तित्व के धनी आपटे जी

श्री बाल आपटे जी की अंतिम यात्रा में उमड़ा जन सैलाब

श्री बाल आपटे जी की दाह-संस्कार में उपस्थित मान्यवर

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

संपादक

आशुतोष

संपादक मण्डल

अवनीश सिंह
संजीव कुमार सिंहा

फोन : 011-43098248
ई-मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com
ब्लॉग : chhatrashaktiabvp.blogspot.com
वेबसाईट : www.abvp.org

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के लिए राजकुमार शर्मा द्वारा बी–50, विद्यार्थी सदन, किशिचयन कॉलोनी, निकट पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली – 110007 से प्रकाशित एवं मॉडर्न प्रिन्टर्स, के–30, नवीन शाहदरा, दिल्ली – 110032 द्वारा मुद्रित।

संपादकीय कार्यालय

"छात्रशक्ति भवन"
690, भूतल, गली नं. 21
फैज रोड, करोलबाग,
नई दिल्ली - 110005

अनुक्रमणिका

विषय	पृ. सं.
संपादकीय	4
प्रखर व्यक्तित्व के धनी आपटे जी (डॉ. महेश शर्मा)	5
एक कर्मयोगी का अवसान (आशुतोष)	7
असम में हो रही हिंसा के पीछे बांग्लादेशी घुसपैठ	9
देश को खोखला करता भ्रष्टाचार (सुनील बंसल)	11
अंग्रेज चले गए, संस्कृति छोड़ गए (दीनानाथ मिश्र)	14
हमारा विशाल अमर रहेगा! (जे नन्द कुमार)	18
परिवर्तन हेतु छात्रशक्ति (अभाविप के 1998 स्वर्ण जयंती वर्ष अधिवेशन में स्व. बाल आपटे जी का भाषण)	21
बांग्लादेशियों के बहाने हो रही देशघाती राजनीति (डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री)	27

वैधानिक सूचना

राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली है।

संपादकीय

बाल आपटे जी नहीं रहे। गत चार दशकों में राष्ट्रीय छात्रशक्ति जब और जिस रूप में भी निकली, आपटे जी का न केवल मार्गदर्शन अपितु लेखकीय सहभाग भी प्राप्त होता रहा। उनका नियमित स्तंभ भी लम्बे समय तक छपा।

अप्रैल में राज्यसभा का कार्यकाल पूरा होने के बाद राष्ट्रीय छात्रशक्ति के मई अंक में उनके बारे में एक लेख छपा था जिसमें उनके व्यक्तित्व की विशेषता को उजागर करने का प्रयास किया गया था। यह जानते हुए भी, कि संगठन की पद्धति में किसी व्यक्ति विशेष के बारे में प्रशंसात्मक लेख लिखे जाने के लिये कोई स्थान नहीं है, प्रमुख कार्यकर्ताओं से बात कर वह लेख केवल इसलिये छापा गया था ताकि कार्यकर्ताओं की वर्तमान टोली को प्रेरणा मिल सके। तब यह कल्पना में भी नहीं था कि इतनी जल्दी पुनः उनके विषय में लिखना होगा, वह भी श्रद्धांजलि के रूप में।

आपटे जी ने दृढ़ता के साथ राष्ट्रीय विचार का प्रतिपादन किया। उनका योगदान देश के छात्र आन्दोलन की इतिहास यात्रा में मील के पत्थर के समान है। राजनीति में रहते हुए भी उनका जीवन निष्कलंक बना रहा। आपटे जी ने एक सार्थक जीवन जिया। वे सभी कार्यकर्ता, जिन्हें जीवन के किसी भी कालखण्ड में उनके साथ रहने का, साथ काम करने का अवसर मिला, उनके मन में बसी हुई स्मृतियां कभी आपटे जी के साथ बिताये समय को भूलने देंगी और न ही जिस राष्ट्रकार्य में उन्होंने अपना जीवन होम किया उससे विलग होने देंगी।

आपटे जी की दिखायी दिशा में हम निरंतर बढ़ते रहें और इसके लिये सदा सक्रिय और प्रयत्नशील रहें, यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। एक और दुखद समाचार आया है केरल से जहां इस्लामिक कट्टरपंथी संगठन पॉपुलर फ्रंट की छात्र शाखा कैम्पस फ्रंट के गुण्डों ने अभाविप के कार्यकर्ता विशाल वेणुगोपाल की नृशंस हत्या कर दी। राज्य सरकार के अनुसार पॉपुलर फ्रंट का प्रतिबंधित संगठन सिमि के साथ संबंध है और वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और सहयोगी संगठनों के दर्जनों कार्यकर्ताओं की हत्या के लिये जिम्मेदार है। दो वर्ष पहले इसी संगठन के लोगों ने पैगंबर मुहम्मद की कथित निंदा वाला प्रश्नपत्र तैयार करने वाले प्रोफेसर टी जे जोसफ का हाथ काट दिया था।

वेदना और विडंबना से भरे समाचार ही देश के उत्तरपूर्वी भाग से आ रहे हैं। एक ओर जहां बाढ़ ने लोगों को त्रस्त कर रखा है वहीं बांग्लादेशी घुसपैठियों के अत्याचार ने महाभारत काल से पूर्व से वहां रह रहे बोडो समाज को अपने घरों से विस्थापित होने को विवश कर दिया है। दर्जनों लोगों की हत्या हो चुकी है। शव मिलने का क्रम जारी है। लाखों लोग शरणार्थियों की तरह पूरे उत्तर–पूर्व में कैंपों में रहने को विवश हैं। सरकार द्वारा उपेक्षा और मीडिया की अवहेलना के साथ ही यह लोग देश की संवेदनहीनता से भी दुखी हैं।

राष्ट्रीय छात्रशक्ति राष्ट्रविरोधी शक्तियों के सर उठाने और उन्हें मिलने वाले राजनैतिक संरक्षण पर गहरी चिन्ता व्यक्त करती है। एक छात्र संगठन के रूप में अभाविप संबंधित सरकारों के समक्ष यह प्रश्न बार–बार उठाती रही है किन्तु उस पर कोई कार्रवाई न होने के कारण जहां कट्टरवादी ताकतों के हौंसले बढ़ते जा रहे हैं वहीं आम आदमी भय के वातावरण में जीने के लिये विवश है। समय रहते अगर कठोर कदम नहीं उठाये गये तो आने वाले दिनों में भारी

श्रद्धांजलि

प्रखर व्यक्तित्व के धनी आपटे जी

✍ डॉ. महेश शर्मा

आजकल के दौर में सार्वजनिक जीवन में बहुत कम मिलते हैं ऐसे स्पश्टवादी व्यक्तित्व, जैसे थे अपने बलवंत परशुराम आपटे, जिन्हें सम्मान से बाला साहेब आपटे के रूप में अनेक जानते हैं। विद्यार्थी परिषद् में पूरे देश में उनकी पहचान प्रो. बाल आपटे के रूप में थी क्योंकि उन दिनों वे मुंबई विश्वविद्यालय में कानून के विद्यार्थियों को पढ़ाते थे। परिषद् और संघ में प्रमुख कार्यकर्ता उन्हें प्यार और अपनेपन से बाल जी के नाम से ही संबोधित करते थे। मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में एम. टैक. का विद्यार्थी और परिषद् का विभाग प्रमुख था जब करीब चार दशक पहले 1971 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के त्रिवेन्द्रम अधिवेशन में पहली बार उन्हें देखा–सुना और एक अमिट छाप मन पर पड़ी। संयोग ऐसा हुआ कि आपातकाल के तत्काल बाद 1977 के वाराणसी अधिवेशन में वे परिषद् के अध्यक्ष पुनः बने और मुझे राष्ट्रीय महामंत्री चुना गया और बहुत नजदीक से एक साथ काम करने का अवसर मिला। इसके पहले भी पटना –1972, अहमदाबाद –1973, मुंबई –1974 में हुए अधिवेशनों और केन्द्रीय बैठकों में निकट से काम करने का अवसर मिला था। 1974 में नागपुर में एक विशेष बैठक बिहार आंदोलन की समीक्षा के लिए हुई। गुजरात के नवनिर्माण आंदोलन के साथ ही जे. पी. के नेतृत्व में सम्पूर्ण क्रांति आंदोलन बहुत ज्वलन्त विषय था, अनेक मुद्दों पर मतभिन्नता थी और तात्कलिक परिस्थिति के दबाव थे। मुझे याद है कि स्वर्गीय दत्तोपंत ठेंगडी ने उस बैठक में संपूर्ण क्रांति शब्द, इसके निहितार्थ, समाजवादी गुटों के अभिप्राय और समूचे आंदोलन के बारे में कई गंभीर सवाल उठाये थे, बनारस और बिहार से जुड़े हम तीन लोग गोविन्दाचार्य, रामबहादुर राय और मैं आंदोलन के पक्ष में थे, उस समय आपटे जी की भूमिका बहुत संतुलित

थी और अन्ततः वही निर्णय भी हुआ, परिषद् और संघ विचार से प्रेरित जन संगठनों को हरी झंडी मिली। बाद में लगातार अनेक वर्षों तक पहले परिषद् और बाद में संघ बैठकों मे सद्यस्थिति में हमारी भूमिका विषय पर आपटे जी के भाषण की सब उत्सुकता और लगन से प्रतीक्षा करते थे।

आपटे जी के बारे में एक आम धारणा थी कि वे वैचारिक पक्ष तक ही सीमित थे, संगठनात्मक पक्ष उनके स्वभाव और व्यवहार में कम था। लेकिन निकट से जुड़े हुए सभी लोग जानते हैं कि संगठन से उनका लगाव और जुडाव बहुत गहरा था।

मुंबई हाईकोर्ट में उनकी पहचान एक अत्यन्त मेधावी अधिवक्ता के रूप में थी। एक समय वहां के मुख्य न्यायाधी । चाहते थे कि एक समय वहां के मुख्य न्यायाधीश बनाया जाये। आपटे जी से सहमति के लिये पूछा गया, कुछ विचार–विमर्श के बाद उन्होंने सूचित कर दिया कि वे एक संगठन से जुड़े हैं, न्यायाधीश बनने के बाद वे संगठन के कार्यकर्ता के रूप में कार्य नहीं

कर पायेंगे और उन्होंने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। आपातकाल में जेल में रहने के बाद बाहर आये और संघ के शिक्षावर्ग में एक माह के प्रशिक्षण में चले गये थे। मुंबई के माही इलाके में कटारिया मार्ग पर गिरीश बिल्डिंग में उनका छोटा सा घर परिषद् का सक्रिय अड्डा था, न केवल बैठक होती थीं, अपितु कुछ प्रमुख कार्यकर्ता बाहर से आकर वहां ठहरते भी थे। बाद में वह फ्लैट डबल हो गया और कामकाज का दायरा भी उसी अनुपात में बढ़ गया था।

वास्तव में, संगठन से उनका जुड़ाव अतुलनीय था। उनकी सहधर्मिणी निर्मला आपटे उन्हीं के समान सक्रिय कार्यकर्ता थीं, आज भी सक्रिय हैं, पहले परिशद् में सक्रिय थी, अब स्त्रीशक्ति का मुख्य दायित्व है। इस हेतु निर्मला जी ने प्राध्यापक की नौकरी भी छोड़ दी थी। उनकी बेटी जान्हवी ने एम. बी. बी. एस की पढ़ाई पूरी करके परिषद् में पूर्णकालिक कार्यकर्ता के नाते काम किया, इतना ही नहीं तो जान्हवी का विवाह भी डा. शिरीष केदार के साथ हुआ जिसने आई. आई. टी. में अध्ययन के बाद परिषद् में विकासार्थ विद्यार्थी प्रकल्प का संचालन पूर्णकालिक कार्यकर्ता के नाते किया।

विद्यार्थी परिषद् के अपने लंबे कार्यकाल में बाल आपटे जी की एक विशिष्ट भूमिका थी। सैद्धान्तिक मसलों पर कठिन परिस्थितियो और विविध चुनौतियों में उनकी असाधारण प्रतिभा का पूरा लाभ परिषद् संगठन को मिला। प्रो. यशवन्तराव केलकर एवं कृष्ण भटट् जी केलकर, मदनदास जी, राजकुमार भाटिया, ओम प्रकाश कोहली, दत्तात्रेय जी, सुशील मोदी, अरूण जेटली और अन्य अनेक कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर उन्होंने एक ऐतिहासिक भूमिका संपादित की। विद्याथी कल का नहीं, आज का नागरिक, छात्रशक्ति–राष्ट्रशक्ति, शैक्षिक परिवर्तन, आरक्षण, असम–संकट और कश्मीर जैसे प्रश्नों पर परिषद् की विशिष्ट भूमिका में आपटे जी ने अग्रणी भूमिका निर्वाह की।

एक प्रसंग इस समय उल्लेखनीय है। 1978–79 में परिषद् ने शैक्षिक परिवर्तन पर एक बड़ा आंदोलन खडा किया था और इस प्रकिया में परिषद् का प्रतिनिधिमंडल तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई से मिलने गया। लंबी बातचीत के अंत में मोरार जी भाई ने आश्वस्त किया कि धैर्य रखें, सब होगा। मैने प्रश्न खड़ा किया कि कब तक? किसके भरोसे आप यह आश्वासन दे रहे है? क्या धन्ना सिंह परिवर्तन कर देंगे? उस समय डा. पी. सी. चुन्दर शिक्षामंत्री और धन्ना सिंह राज्यमंत्री थे और दोनो का अभी तक का कामकाज इतना लचर था कि एक युवा नेता के नाते मेरा गुस्सा फूट पडा। मोरार जी भाई नाराज हो गये और अपने अंदाज में डांटकर बोले, तो क्या आप करेंगे?ये आपकी धृष्टता है। मैं तो उनका गुस्सा देखकर चुप हो गया, कोहली जी–अरूण जेटली भी चुप रहे, लेकिन अत्यंत स्फूर्त और त्वरित उत्तर आपटे जी ने दिया –हां, कर सकते हैं। इतना संतुलित और आत्मविश्वासपूर्ण उत्तर था कि मोरार जी भाई भी निरुत्तर हो गये और हम बाहर आ गये। बाद में, संसद के सामने प्रदर्शन में हमने स्पस्ट मांग की थी कि शिक्षामंत्री कुछ करो, नहीं तो त्यागपत्र दों। ऐसे स्पश्टवादी और प्रखर व्यक्तित्व के थे हमारे बाल आप्टे जी।

भाजपा में भी आप्टे जी की प्रतिभा सामने आई। 2004 में संसदीय चुनावों में अप्रत्याशित हार के बाद पार्टी ने आपटे जी की अध्यक्षता में एक जांच समिति गठित की जिसने पूरे काफी चर्चा हुई थी, मुझे लगता है कि यह रिपोर्ट आज भी प्रासंगिक है, उन सुझावों पर पार्टी को समुचित ध्यान देना चाहिए।

एक और बात का उल्लेख उचित लगता है। व्यक्ति के नाते पूर्णता का दावा तो किसी के बारे में न किया जा सकता, आपटे जी भी इसका अपवाद नहीं हैं। लेकिन जैसा यशवंतराव केलकर हमें बताते थे कि मिलजुलकर टीम के रूप में ठीक से काम करें तो हम पूर्णांक बन सकते हैं। आपटे जी की यह विशेषता थी कि उन्होंने संगठन में सभी स्तरों पर टीम के एक सदस्य के रूप में काम करना सीखा था, इस मर्यादा का हमेशा पालन किया और इस भूमिका को बखूबी निभाते हुऐ अपनी अद्वितीय मेधा और प्रखर बुद्धि से योग्य संतुलन बनाते हुऐ संगठन और विचारधारा के लिए अविस्मरणीय योगदान किया। संघ परिवार पर एक अमिट छाप छोड़कर विगत 17 जुलाई को अपना पार्थिव शरीर छोड़कर अगली यात्रा के लिए प्रस्थान कर गये।

(लेखक अभाविप के पूर्व महामंत्री हैं)

नहीं रहे श्री बाल आपटे

एक कर्मयोगी का अवसान

✍ आशुतोष

अप्रेल माह में श्री बलवंत परशुराम आपटे उपाख्य बाल आपटे का राज्यसभा का दूसरा कार्यकाल पूरा हुआ। इस अवसर पर उनके मित्रों और कार्यकर्ताओं ने एक शुभेच्छा कार्यक्रम आयोजित किया। अपने संक्षिप्त उदबोधन में श्री आपटे ने कहा कि गत वर्ष अस्वस्थ होने के बाद अब वे यह नहीं कह सकते कि उन्हें कुछ नहीं होता, जैसा वे हमेशा कहा करते थे। इससे पहले तक वे पूरी तरह स्वस्थ थे। नियमित आसन व ध्यान के साथ संयमित जीवन का इसमें बड़ा योगदान था।

दिल्ली से जाने के बाद भी उन्होंने अपना मेडिकल चैक–अप कराया था जिसमें डॉक्टरों ने उन्हें पूरी तरह ठीक पाया था। हाल ही में सहधर्मिणी निर्मला ताई के घुटनों का ऑपरेशन हुआ था जिसके कारण कुछ समय के लिये वे पुत्री जाह्नवी के घर पर आ गये थे। स्वास्थ्य लाभ के बाद वे अपने घर 'गिरीश' जाने की योजना बना ही रहे थे कि उन्हें सांस लेने में कुछ कठिनाई अनुभव होने लगी। 6 जुलाई को श्री आपटे को हिन्दुजा अस्पताल ले जाया गया जहां उन्हें भर्ती कर लिया गया।

अस्पताल में उनका लाक्षणिक इलाज तो चल रहा था किन्तु अचानक ऐसी स्थिति आने का कारण डॉक्टर भी नहीं समझ पा रहे थे। तरह–तरह की जांच होती रहीं और चिकित्सा चलती रही किन्तु उनकी स्थिति बिगड़ती ही गयी। शीघ्र ही उन्हें वेंटिलेटर पर लेना पड़ा। शरीर के अवयव शिथिल होते जा रहे थे। 15 जुलाई की शाम डॉक्टरों ने अपने हाथ खड़े कर दिये।

परिवार तथा संगठन के वरिष्ठ लोगों के लिये भी यह जीवन का सर्वाधिक कठिन अवसर होता है जब किसी अपने आत्मीय को वेंटिलेटर से हटाने का निर्णय करना हो। निर्णय लेने से पहले हर संभावना को टटोल लेना आवश्यक होता है। संवेदनाएं उमड़ती हैं। बीता जीवन याद आता है। मन और बुद्धि का द्वंद चलता है। यह द्वंद चल ही रहा था कि 17 जुलाई 2012 को अपराह्न 3.10 बजे वेंटिलेटर पर रहते हुए ही उन्होंने अन्तिम सांस ली।

1996 से 1998 तक श्री आपटे महाराष्ट्र के अतिरिक्त महाधिवक्ता रहे। वर्ष 2000 ई में वे पहली बार राज्यसभा में चुन कर आये। 2006 में वे पुनः राज्यसभा के लिये निर्वाचित हुए। 2002 में उन्हें भाजपा का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का दायित्व मिला जिसका निर्वहन वे 2010 तक करते रहे।

श्री आपटे मुंबई में विधि के प्राध्यापक रहे। बाल्यकाल से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक रहे श्री आपटे 1960 के दशक में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़े। इसके बाद प्रायः चार दशकों तक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने उनके नेतृत्व में अपनी यात्रा पूरी की। वे 1974 में परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गये। यही वह समय था जब देश में मंहगाई और भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक आंदोलन आकार ले रहा था। गुजरात में नवनिर्माण आंदोलन प्रारंभ हो चुका था। बिहार में आंदोलन की गूंज सुनाई देने लगी थी।

1974 का यह वर्ष अभाविप की स्थापना का रजत जयन्ती वर्ष था। मुंबई में संपन्न तब तक के सबसे बड़े राष्ट्रीय अधिवेशन में श्री आपटे को अध्यक्ष चुना गया, साथ ही मंहगाई और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आंदोलन को देशव्यापी बनाने की घोषणा भी की गयी।

लोकनायक जयप्रकाश के आंदोलन से जुड़ने के बाद बदलाव की मांग ने गति पकड़ी तथा देखते ही देखते यह आंदोलन देश भर में फैल गया। देश में आपातकाल की घोषणा हुई तथा परिषद ने इसके विरुद्ध भूमिगत आंदोलन प्रारंभ कर दिया। दिसम्बर 1975 में श्री आपटे को गिरफ्तार कर लिया गया और मीसा(आन्तरिक सुरक्षा कानून) के अंतर्गत नजरबन्द कर दिया गया। 1977 में चुनाव की घोषणा के बाद ही उनकी रिहाई हो सकी थी।

इस बीच विधि महाविद्यालय से उनकी सेवा समाप्त की जा चुकी थी अतः उन्हें व्यावसायिक रूप से वकालत को अपनाना पड़ा लेकिन परिषद से उनका प्रगाढ़ संबंध बना रहा। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद को गढ़ने वाले शिल्पियों में श्री आपटे थे। संगठन का नेतृत्व किया, यह कहने से शायद बात पूरी नहीं होती। यशवंतराव केलकर हों या बाल आपटे जी, उन्होंने संगठन को जिया था। कार्यकर्ता से जिन गुणों, मूल्यों की अपेक्षा की, व्यक्तिगत जीवन में उन्हें उतारा। यशवंतराव जी की मृदुता जहां कार्यकर्ता को जोड़े रखती थी तो आपटे जी की दृढ़ता कार्यकर्ताओं को मार्ग से डिगने नहीं देती थी। आपटे जी संगठन के वरिष्ठ कार्यकर्ता के रूप में कठोर और अनुशासनप्रिय अधिकारी की भूमिका में ही दिखते थे। किन्तु साथ काम करने का अवसर जिन्हें मिला वे जानते हैं कि कार्यकर्ता के लिये उनके मन में वात्सल्य भी अपार था। संभवतः यह भूमिका यशवंतराव के जाने के बाद अधिक बलवती हुई ताकि संगठन के सामान्य कार्यकर्ता को रिक्तता का अनुभव न हो सके।

अपने प्रति कठोर, दूसरों के प्रति नरम। सभी आवश्यक, अनिवार्य कोई नहीं। हर धातु पिघलती है, अपेक्षित ऊष्मा चाहिये। व्यक्ति निर्माण से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण। कार्यकर्ता विकास और कार्यपद्धति का आग्रह। अभाविप की जिस टोली के सामूहिक चिंतन से यह तत्वज्ञान प्रकट हुआ था, उसकी प्रेरणा थे यशवंतराव केलकर। भगीरथ बन उसे आगे की पीढ़ी के कार्यकर्ताओं तक पहुंचाने का सफल प्रयत्न किया आपटे जी ने।

इसके लिये कार्यकर्ताओं को उपदेश देना नहीं पड़ा। उनके अपने आचरण से कार्यकर्ताओं ने स्वयं संदेश ग्रहण कर लिया। यशवंतराव का आचरण स्वयं साक्षी था तो आपटे जी परीक्षा से भी गुजरे। यह परीक्षा थी राजनीति की रपटीली राहों की यात्रा। राज्यसभा के दो सत्र, अर्थात बारह वर्ष का समय। जहां शत्रु ही नहीं, मित्र भी चाहते हैं कि आप स्खलित हों। जहां आपका ईमानदार रहना उनमें से अनेक के लिये असुविधाजनक है और आपका गिरना उनके लिये संतोषप्रद।

मूल्यों पर दृढ़ रहते हुए जीना और बिना समझौता किये कीचड़ में कमल की तरह सार्थक जीवन जीने का उदाहरण श्री बलवंत आपटे ने प्रस्तुत किया। जो लोग आपटे जी को जानते हैं वे यह भी जानते हैं कि उन्हें मूल्यों से डिगा पाना कठिन नहीं असंभव था। जीवन के उतार–चढ़ाव में उन्होंने हर कठिनाई को अपनी दृढ़ता से पार किया। सरल इतने, कि बड़ी से बड़ी गलती को मानवीय भूल मान कर क्षमा करने में पल भर न लगायें। कठोर इतने, कि सिद्धान्त के विरुद्ध किसी भी बात को मनवा लेना असंभव, चाहे वह बात कितना भी बड़ा व्यक्ति कह रहा हो। जब सब ओर पतन के आलेख लिखे जा रहे हों, तब अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का एक कार्यकर्ता राजनैतिक जीवन में प्रकाश स्तंभ के रूप में खड़ा रहे, यह संगठन के लिये गौरव का विषय है।

राज्यसभा में आना अथवा कार्यकाल पूरा कर जाना, यह कोई नयी अथवा विशेष बात नहीं है। विशेष है उनका कृतित्व। उन्हें जब भाजपा द्वारा राज्यसभा में भेजे जाने का प्रस्ताव दिया गया तो उन्होंने इसे स्वीकार करने में पर्याप्त समय लिया और अंततः राज्यसभा में जाना अथवा नहीं, यह निर्णय संगठन पर छोड़ दिया। हां कहने में समय लेने वाले आपटे जी ने पुनः राज्यसभा में भेजे जाने का कोई आग्रह नहीं दिखाया।

पुणे के निकट खेड़ तालुका में राजगुरुनगर नामक एक गांव में श्री परशुराम आपटे के पुत्ररूप में 18 जनवरी 1939 को श्री बलवंत आपटे ने जन्म लिया। गांव की विशेषता इस तथ्य से ही जानी जा सकती है कि शहीद भगत सिंह के साथ फांसी का फंदा चूमने वाले राजगुरु भी इस गांव के थे। ऊर्जा के धनी इस

शेष पृष्ठ 10 पर...

असम में हो रही हिंसा के पीछे बांग्लादेशी घुसपैठ : उमेश दत्त

असम में हो रही हिंसा व राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के लिए बांग्लादेश घुसपैठियों को जिम्मेदार मानते हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उमेश दत्त ने सरकार से उनके खिलाफ ठोर कार्रवाई करने की मांग की है।

इस संदर्भ में उमेश दत्त ने कहा, 'परिषद असम के जिलों (चिरांग, कोकराझार, बक्सा, धुवरी, बोगाईगांव) में हो रही हिंसा व राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के लिए बांग्लादेशी घुसपैठियों को जिम्मेदार मानती है। इस क्षेत्र में वर्षों से बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठ कर जनजातीय लोगों की जमीन हड़पने, वहां के रोजगार पर कब्जा करने तथा कई तरह की राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में संलिप्त हैं। सरकार वोट बैंक के लालच में इन्हें प्रश्रय दे रही है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में चल रही हिंसा के प्रारम्भ व पूर्व में घटित घटनाओं को अगर देखें तो बांग्लादेशी घुसपैठी मुस्लिमों द्वारा इस क्षेत्र के लोगों व विशेषकर बोडो जनजातीय गों पर किये जाने वाले हमलों में लगातार वृद्धि हुई है। जनजातीय लोगों की जमीनों पर कब्जे किये जाने व बढ़ती जिहादी गतिविधियों के कारण ही ऐसी परिस्थितियां पैदा हुई हैं।

राष्ट्रीय महामंत्री ने कहा कि इस मामले में विद्यार्थी परिषद का स्पष्ट मत है कि वर्तमान में केन्द्र व राज्य सरकार असम में हो रही इन घटनाओं पर लगातार पूर्णतः उदासीन रवैया अपना रही है एवं बांग्लादेशी घुसपैठियों को वोट बैंक के रूप में उपयोग करके तुष्टीकरण व राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति हमेशा ढिलाई की नीति अपना रही है, जिसके कारण ही यह परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं। वर्तमान समय में सीमावर्ती क्षेत्रों के हालात काफी गंभीर हो चुके हैं जिससे देश की सुरक्षा पर खतरा उत्पन्न हो गया है।

विदित हो कि सीमावर्ती क्षेत्रों में बांग्लादेशी घुसपैठियों का बाहुल्य हो चुका है और लगभग चार करोड़ बांग्लादेशी घुसपैठिये पूरे देश में फैल चुके हैं, जो लगातार इस देश की जमीन पर कब्जा करने और भारत में राष्ट्रविरोधी गतिविधियां चलाने में संलिप्त है। विद्यार्थी परिषद् वर्षों से केन्द्र सरकार को बांग्लादेशी घुसपैठ के बारे में पर्याप्त सबूतों के साथ सूचित करती रही है और लगातार आन्दोलनों के माध्यम से इस मुद्दे को उठाती रही है। इतना ही नहीं 2008 में बांग्लादेशी सीमा पर स्थित किशनगंज में चालीस हजार छात्रों का विराट प्रदर्शन करते हुए इस मुद्दे को उठाने का प्रयास विद्यार्थी परिषद् ने किया था। केन्द्र सरकार व माननीय न्यायालय ने भी बांग्लादेशी घुसपैठ को माना था एवं केन्द्र सरकार ने उस समय लगभग तीन करोड़ बांग्लादेशी अवैध रूप से भारत में होने की बात को स्वीकार किया था।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने मांग की है कि असम में उत्पन्न हुए हालात से बिगड़ती हुई स्थिति के लिये दोषियों को तत्काल गिरफ्तार करके उन्हें कठोर सजा देकर कानून व्यवस्था को बहाल किया जाये एवं रहवासियों के जान–माल की सुरक्षा सुनि चत की जाये। बांग्लादेशी सीमा पर चौकसी बढ़ाई जाए तथा बांग्लादेशी सीमा पर पर्याप्त सेना तैनात की जाए। भारत में राष्ट्र विरोधी गतिविधियां चलाने वाले बांग्लादेशी घुसपैठियों पर कड़ी कार्रवाई करते हुए इन्हें चिन्हित कर पुनः दे ा से बाहर भेजा जाए। विद्यार्थी परिषद यह भी मांग करती है कि असम के आम नागरिकों व विशेषकर बोडो जनजातीय लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए हिंसा प्रभावित क्षेत्र से बेघर व आहत हुए लोगों का पुनर्वास सुनिश्चित किया जाए।

पृष्ठ 8 का शेष...

गांव में श्री आपटे के पिता ने न केवल स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया बल्कि सामाजिक परिवर्तन के भी अग्रदूत बने। ग्राम पंचायत, राजगुरुनगर सहकारी बैंक, आदि अनेक कार्य श्री परशुराम आपटे के प्रयत्न से प्रारंभ हुए। दशकों बाद आज भी राजगुरुनगर में उनकी स्मृति में वार्षिक समारोह का आयोजन होता है। पिता के संस्कार पुत्र में सहज रूप में ही विकसित हुए।

बड़े भाई भाांताराम तथा छोटे बाल, दोनों का बचपन गांव में ही बीता। पढ़ाई के लिये श्री बाल आपटे मुंबई आये तो यहीं के होकर रह गये। विवाह हुआ निर्मला ताई से जो स्वयं विद्यार्थी परिषद की कार्यकर्ता रहीं। उनकी पुत्री डॉ जाह्नवी मेडिकल की पढ़ाई पूरी करने के बाद अभाविप की दो वर्ष तक पूर्णकालिक रही। पुत्री का विवाह भी परिषद में पूर्णकालिक रहे कार्यकर्ता शिरीश केदारे से हुआ। संगठन को परिवार के भीतर भी स्थान दिलाने का काम प्रा. यशवंतराव केलकर ने किया। बाल आपटे जी के परिवार ने इस श्रृंखला को आगे बढ़ाया। आपटे जी के परिवार में यूं तो तीन ही लोग हैं लेकिन उनके विस्तृत परिवार में अभाविप, भाजपा और संघ के सैकड़ों–हजारों कार्यकर्ता शामिल हैं।

छात्र संगठन को दिशा देने के बाद राजनैतिक क्षेत्र में उनके जीवन की एक तरह से दूसरी पारी थी। दोनों ही पारियों को उन्होंने सफलता के साथ–साथ सार्थकता से पूरा किया। काल के पाश ने जिस तेजी के साथ उन्हें हमसे छीन लिया, इसकी कल्पना भी सहज नहीं थी। संभवतः वे भी इसका आभास नहीं कर सके थे इसलिये जाने से पहले कार्यकर्ताओं को दिशादर्शन नहीं मिल सका। लेकिन आचरण के लिये उनका सारा जीवन हमारे सामने है जिस पर चल कर संगठन को, राष्ट्र को उस लक्ष्य तक पहुंचाया जा सकेगा जिसके

डूसू चुनाव : फिर परचम लहराने की तैयारी में विद्यार्थी परिषद

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय (डीयू) में छात्रसंघ चुनाव का बिगुल बजते ही छात्र संगठनों की सक्रियता बढ़ने लगी है। छात्र संगठन अभी से नए छात्रों को लुभाने के लिए नए–नए तरीके अपनाने में लगे हैं। विश्वविद्यालय का राजनीतिक अखाड़ा कहे जाने वाले नार्थ कैंपस की आर्ट फैकल्टी इन दिनों छात्र नेताओं और उनके होर्डिंग व पोस्टर से पटी नजर आ रही है। इतना ही नहीं, इस दिनों साल भर परिसर से गायब दिखने वाले छात्र संगठन भी अब परिसर में दिखने लगे हैं। वैसे देखा गया है दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रसंघ चुनाव में मुख्य मुकाबला अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) और कांग्रेस समर्थित भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन (एनएसयूआई) के बीच ही रहा है। इन दोनों छात्र संगठनों को छोड़ दिया जाए तो अन्य संगठन सिर्फ चुनाव में अपनी उपस्थिति दर्ज कराते नजर आते हैं।

पिछले कई सालों से डूसू पर एबीवीपी का परचम कायम रहा है। इधर बीच लगातार दो सालों में परिषद ने डूसू की चार में तीन सीटों पर अपना परचम लहराकर यह साबित कर दिया है कि विश्वविद्यालय के छात्र राष्ट्रवादी विचारधारा के समर्थन में हैं। इस संदर्भ में एबीवीपी के प्रदेश मंत्री रोहित चहल का कहना है, 'एबीवीपी वर्षभर अपने रचनात्मक और आंदोलनात्मक गतिविधियों से परिसर में सक्रिय रहने वाला छात्र संगठन है। छात्र हित के साथ–साथ राष्ट्र हित के मुद्दों पर सदैव अपनी आवाज को बुलंद करने वाले छात्र संगठन के रूप में एबीवीपी की अलग पहचान है। यही कारण है कि डूसू चुनाव में हमें हर बार छात्रों का समर्थन मिलता है।'

विदित हो कि डीयू में छात्रसंघ चुनाव के लिए 14 सितंबर की तारीख तय की गयी है। इसके लिए प्रत्याशी 4 सितंबर को शाम तीन बजे तक नामांकन भर सकते हैं और उसी दिन जांच के बाद शाम तक योग्य प्रत्याशियों की सूची जारी कर दी जाएगी। जबकि नामांकन वापसी के लिए प्रत्याशियों को 6 सितंबर दोपहर बारह बजे तक आवेदन करना पड़ेगा। फिलहाल अभी तक यह तय नहीं हो पाया है कि मतगणना किस दिन होगी।

डीयू रजिस्ट्रार अलका शर्मा ने सूचना जारी कर कहा है कि शांतिपूर्ण चुनाव संपन्न कराने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है। इसके लिए एक तीन सदस्यीय टीम का गठन भी किया गया है, जो पूरे चुनाव का संचालन करेगी। इस टीम में ज्योलॉजी विभाग प्रो. सीएस दुबे को मुख्य चुनाव आयुक्त बनाया गया है। इनके अलावा इस टीम में केमेस्ट्री विभाग के प्रो. डीएस रावत को चीफ रिटर्निंग आफिसर व डा. सतीश कुमार को रिटर्निंग आफिसर बनाया गया है।

देश को खोखला करता भ्रष्टाचार

✍ सुनील बंसल

भ्रष्टाचार रूपी बीमारी आज देश को अन्दर ही अन्दर खोखला कर रही है यह एक ऐसा नासूर बन गई है जिसका स्थाई इलाज आज पूरा देश ढूंढ़ रहा है।

भ्रष्टाचार से त्रस्त जनता आज आक्रोश में है, समाधान का मार्ग तलाश रही है। केन्द्र सरकार भ्रष्टाचार रोकने के चाहे जिस प्रकार के दावे करे सच्चाई यह है कि ज्यादातर कानून या तो प्रभावी नहीं हैं या उनको ईमानदारी से लागू नहीं किया जा रहा।

केन्द्र व राज्य सरकारें भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के लिए कठोर प्रावधान करने की बात तो करती हैं परन्तु यथार्थ में कुछ करती नजर नही आती। यदि ऐसा हुआ होता तो न तो किसी को सड़क पर उतरने की जरूरत पड़ती न ही न्यायालय को हस्तक्षेप करने की। भ्रष्टाचार को रोकने के उपाय लागू करने के बजाय सत्ता पक्ष आन्दोलनों को दबाने व बदनाम करने का काम ज्यादा कर रहा है। दुर्भाग्य से यू.पी.ए. सरकार के नेतृत्व की नीयत ठीक नहीं वह भ्रष्ट व्यक्तियों को हर तरह से बचाने का प्रयास करती व उनके पक्ष में खड़ी दिखाई दे रही है।

आज देश के हर कोने में भ्रष्टाचार के भस्मासुर पैदा हो गये हैं। देश की सम्पदा को लूटने में नेता, अधिकारी व व्यापारी सभी लिप्त हैं। 2जी स्पैक्ट्रम आवंटन में 1 लाख 76 हजार करोड़ की लूट के बाद, देश की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने वाले राष्ट्रमंडल खेलों में घोटाला, करगिल शहीदों के नाम पर बनी आदर्श हाउसिंग सोसायटी में राजनेता और सेना के अफसरों द्वारा बंदरबांट का मामला अभी सुलझा भी नहीं है कि इन सभी घोटालों के आरोपी बेशर्मीपूर्वक सार्वजनिक रूप से बयान दे रहे हैं।

ए. राजा का जेल से जमानत पर बाहर आने पर तमिलनाडु में राजनैतिक स्वागत होना, सुरेश कलमाडी का लंदन ओलम्पिक में जाने की कोशिश को न्यायालय द्वारा 'देश की साख खराब होगी' कहकर रोक लगाना हो चाहे 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले के समय के वित्त मंत्री को ही इस मामले में मंत्री समूह का प्रमुख बनाना हो। आदर्श हाउसिंग सोसायटी घोटाले के आरोपी अशोक चव्हाण, विलासराव शिंदे अब एक दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं जबकि ये सभी इसमें शामिल थे। इन लोगों को अब न कानून का डर है न ही समाज से शर्म – इसी कारण भ्रष्टाचार पर रोक के बजाय यह रोजाना नये–नये तरीकों से बढ़ता ही दिखाई दे रहा है।

हाल ही में आई कैग रिपोर्ट में कोयला आवंटन में केन्द्र सरकार व प्रधानमंत्री कटघरे में खड़े दिखाई दिये। रिपोर्ट के अनुसार देश को 1 लाख 80 हजार करोड़ के राजस्व का नुकसान हो गया। पहले प्रधानमंत्री व सरकार इस घोटाले से इन्कार करते रहे। बाद में प्रधानमंत्री ने भावुक प्रतिक्रिया दी व सी.बी.आई. की जांच बैठा दी। सरकार की साख पर 2जी की तरह एक और बट्टा लग गया। जो बची–खुची इज्जत थी वह पूर्व सेनाध्यक्ष जनरल वी.के. सिंह के इस आरोप से चली गयी कि उनको रक्षा सौदों में दलाली के रूप में 14 करोड़ की रिश्वत की पेशकश की गयी।

टाटा टेट्रा घोटाला भी उसी समय उजागर हुआ। भ्रष्टाचार से हमारा रक्षा क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा। 25 वर्ष पूर्व का बोफोर्स तोप घोटाला स्वीडिश पुलिस के पूर्व प्रमुख लिंडस्ट्रोम के बयान से फिर गरमा गया – उन्होनें कहा कि 'राजीव गांधी ने इस मामले को दबाने का हरसंभव प्रयास किया। यह बयान तथा इतालवी नागरिक क्वात्रोची को दोषमुक्त करार देना सी.बी.आई. पर काला धब्बा है। सी. बी.आई. किस प्रकार से राजनैतिक दबाव में काम करती है यह उसका जीता–जागता उदाहरण है। कांग्रेस हमेशा सी.बी.आई. को अपने राजनैतिक हथियार के रूप में प्रयोग करती रही है चाहे वह मुलायम सिंह यादव की अतिरिक्त आय का मामला हो, चाहे मायावती का ताज कोरिडोर मामला या हाल ही में आन्ध्र में जगन रेड्डी पर की गयी कार्यवाही हो।

इन सभी घटनाओं और घोटालों के उजागर होने पर देशभर में चले आन्दोलन से भी सरकार के कान पर जूं नहीं रेंगी, कोई कार्यवाही नहीं कर रही – जो कुछ हुआ वह भी न्यायालय के कारण–चाहे वह कलमाडी, कनिमोझी, ए. राजा को जेल भेजना हो, चाहे काले धन को

वापस लाने के लिए एस.आई.टी. का गठन हो। सरकार अपनी निष्क्रियता का बचाव करती रही – सरकार के मंत्री ढ़िठाई से आन्दोलनों पर ही हमले व बदनाम करते रहे। सरकार द्वारा एस.आई.टी. को खत्म करवाने का प्रयास कोर्ट में करवाना उसकी काले धन को वापस लाने के प्रति मंशा जाहिर करती है।

अभी सरकार ने काले धन पर श्वेत पत्र जारी किया उसमें सरकार ने माना 2006 में 23373 करोड़ काला धन विदेशों में जमा था जो 2010 में 9295 करोड़ रह गया यानि 4 वर्ष में 14000 करोड़ रूपये गायब हो गये या अन्य सुरक्षित बैंकों में स्थानान्तरित हो गये या पुनः विदेशी निवेश के नाम पर भारत में ही खपा दिये गये। इस प्रकार 2012 तक तो सारा काला धन गायब हो जायेगा। एक रिपोर्ट के अनुसार 462 अरब डालर यानि 20.92 लाख करोड़ रूपया विदेशी बैंकों में काला धन है। सरकार इस सत्य को अपने श्वेत पत्र में छुपा गयी और यह काला धन वापस कैसे आयेगा इस पर भी कुछ नहीं कहा। सरकार का यह श्वेत पत्र देश की आंख में धूल झोंकना ही है।

भ्रष्टाचार को रोकने के लिए कठोर कानून की आवश्यकता देश महसूस हमेशा करता रहा है, सत्ता में बैठे लोग हमेशा तात्कालिक उपाय करके अपने आपको बचा लेते हैं। वर्षों पूर्व बने सी.वी.सी. का आज क्या हाल है हमें मालूम है, आधे प्रान्तों में आज भी लोकायुक्त नहीं है न ही सिटीजन चार्टर लागू हुआ है। लोकपाल बनाने की मांग पर देश की संसद से सड़क तक पर पर बहस व आन्दोलन होने के बावजूद सरकार बचने का रास्ता ढूंढ रही है – खामियां निकाल रही है, कानून बनाने में देरी कर रही है। यह सही है कि लोकपाल कानून भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा सकता है – दोषियों को सजा दे सकता है परन्तु यह भी सत्य है कि लोकपाल सरकार द्वारा बनाई जा रही जन विरोधी नीतियों को तनिक भी नहीं रोक सकता।

देश में बढ़ती मंहगाई कोई वाजिब कारणों से नहीं गलत नीतियों का ही परिणाम है। हजारों टन अनाज रखरखाव के अभाव में सड़ रहा है, दूसरी तरफ लाखों लोगों को दो समय का भोजन भी नहीं मिल रहा। शिक्षा का अधिकार कानून बन गया पर शिक्षा के निजीकरण के नाम पर व्यापारीकरण हो रहा है। जिसके कारण दोहरी शिक्षा व्यवस्था खड़ी हो गयी है – अमीर के लिए अलग – गरीब के लिए अलग। शिक्षा के क्षेत्र में शुल्क निर्धारण, कुलपतियों की नियुक्तियाँ, छात्रों व अभिभावकों का शोषण यह गलत नीतियों व भ्रष्टाचार का ही परिणाम है।

आम आदमी के कल्याण के लिए बन रही मनरेगा व एन.आर.एच.एम. जैसी योजनाओं में भ्रष्टाचार जगजाहिर है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के साधन व आधारभूत संरचना ठीक करने के बजाय इन योजनाओं पर हजारों करोड़ रूपये व्यर्थ बहाया जा रहा है। ये योजनायें लुभावनी जरूर हैं पर इनके क्रियान्वयन में बढ़ते भ्रष्टाचार ने इन्हें सरकारी पैसे से वोट खरीदने की योजना बना दिया है। बढ़ते भ्रष्टाचार व जनविरोधी नीतियों ने आज सरकार व आम आदमी के मध्य दरार बढ़ाने का काम किया है। आम आदमी का विश्वास राजनेताओं के साथ ही इस व्यवस्था पर से उठ गया है।

गत् 20 माह से देश में चल रहे भ्रष्टाचार विरोधी आन्दोलन को मिल रहा जन समर्थन यह बताता है कि भ्रष्टाचार की इस सड़ांध से देशवासी किस कदर ऊब चुके हैं। वह भ्रष्टाचारियों पर कार्यवाही चाहता है आगे भ्रष्टाचार न हो उसके लिए कानून चाहता है, भ्रष्टाचार बढ़ने के जो कारण व्यवस्था में हैं उनमें सुधार करना चाहता है। सरकार के मूल जन विरोधी चरित्र पर अंकुश चाहता है।

भ्रष्टाचार के तीन पक्ष–एक लेने वाला–एक देने वाला और देखने वाला। देखने वाला ही समर्थ है बाकि दो तो अपराध में लिप्त हैं। आज देश के आम आदमी के मन में सवाल है, आक्रोश है, दिल में आग है – आग लगी है तो देखने वालों का भी दायित्व बन जाता है कि भ्रष्टाचार के विरोध में देश भर में लगी यह आग तब तक ना बुझे जब तक कुछ ठोस परिवर्तन ना आये।

इस परिवर्तन की लड़ाई में युवा वर्ग का अभी तक जुड़ाव अभिनन्दनीय है। इस लड़ाई की अग्रिम पंक्ति में वह लड़ने के लिए खड़ा हुआ है। वह केवल भ्रष्टाचारियों को जेल भेजने में या कानून बन जाने से ही संतुष्ट नही होगा। वह इन भ्रष्ट लोगों को सत्ता से बेदखल कर राजनैतिक सजा देगा व व्यवस्था में सुधार के लिए जनमानस तैयार में अपनी भूमिका का बखूबी निर्वहन करेगा व सरकार पर दबाव के लिए जन आन्दोलन खड़ा करने में अपनी शक्ति का उपयोग करेगा – यही काम आज देश में 'यूथ अगेंस्ट करप्शन' कर रहा है।

(लेखक 'वाई. ए. सी. के राश्ट्रीय संयोजक हैं)

बिहार

छात्रा सम्मेलन में हुआ सामाजिक, शैक्षणिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार

पटना। शैक्षणिक अराजकता, भ्रष्टाचार, भ्रूणहत्या, दहेज व असुरक्षा जैसी समस्याओं के विरोध में छात्राओं को संगठित करने हेतु अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा प्रांत छात्रा सम्मेलन का आयोजन किया गया। पटना में आयोजित इस सम्मेलन में महिलाओं से संबंधित सामाजिक, शैक्षणिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं पर व्यापक विचार विमर्श हुआ। सम्मेलन के उदघाटन भाषण में बिहार बाल संरक्षण आयोग की अध्यक्षा श्रीमती निशा झा ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य में सामाजिक मुद्दों पर महिलाओं व छात्राओं की सहभागिता को लेकर विद्यार्थी परिषद द्वारा किया गया कार्य सराहनीय है। इससे परिवर्तन की नयी उम्मीद जगी है। सामाजिक व शैक्षिक मूल्यों की स्थापना हेतु एक बार फिर मातृ शक्ति को आगे आने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि इतिहास गवाह है देश में जब भी कोई संकट आया है मातृ शक्ति कभी दुर्गा के रूप में तो कभी रानी लक्ष्मी बाई के रूप में अग्रणी भूमिका में रही हैं।

इस अवसर पर अभाविप की राष्ट्रीय उपाध्यक्षा कुमारी ममता यादव ने कहा कि जब–तक इस देश की नारी शक्ति संगठित नहीं होगी तब–तक समाज में व्याप्त कुरीतियों का खात्मा नहीं किया जा सकता। उन्होंने शिक्षा के व्यापारीकरण, शुल्क वृद्धि, विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में व्याप्त शैक्षणिक अराजकता के विरोध में चल रहे आंदोलनों को प्रभावी बनाने हेतु छात्राओं का आह्वान किया।

कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि व अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. रामनरेश सिंह ने कहा कि परिषद समाज के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता हेतु अपने स्थापनाकाल से ही प्रयासरत रहा है। अभाविप ने अपने रचनात्मक, आंदोलनात्मक व संगठनात्मक कार्यों के जरिए समाज में महिलाओं की भूमिका को आगे लाने हेतु अग्रणी भूमिका का निर्वहन किया है। सम्मेलन में गुहावटी में छात्रा के साथ हुई घटना के विरोध में एक प्रस्ताव भी पारित कर कहा गया कि इस तरह की घटना समाज के माथे पर कलंक है। इस घटना में सभी दोषियों को गिरफ्तार कर सजा न दिया जाना अत्यन्त ही दुर्भाग्यपूर्ण है।

अंग्रेज चले गए, संस्कृति छोड़ गए

✍ दीनानाथ मिश्र

औपनिवेशिक साम्राज्य समाप्त होने के बाद भारत में सांस्कृतिक संहार आज भी चालू है। जब साम्राज्य था, तब तो अंग्रेजी शिक्षा ने भारत के अतीत का गौरव नष्ट करने के लिए दसियों मोर्चों पर सुनियोजित प्रयास कर शिक्षा व्यवस्था को इस तरह इस्तेमाल किया कि भारतीय हीनता की भावना से कभी मुक्त न हो सकें। कभी भविष्य में नई ऊंचाइयाँ प्राप्त करने की कोशिश न कर सकें। मानसिक रूप से उर्वर और मौलिक न रह सकें। आज भी औपनिवेशिक काल की शिक्षा व्यवस्था ज्यों की त्यों अबाध गति से चल रही है। वह मिथक बने हुए हैं जो उन्होंने बनाए थे। इस लेख के संदर्भ में मैं केवल एक मिथक की चर्चा करूंगा। परम्परागत रूप से भारतीय संस्कृति पर गौरव करने वाले लोग वेदों को प्राचीनतम भण्डार मानते हैं। अंग्रेजों ने नया मिथक बनाया और प्रतिपादित किया कि वेद तो गड़ेरियों के गीत हैं।

अब जरा देखें कि जिन्हें वह गड़ेरियों के गीत 'शेफर्ड सांग्स' कहते थे उसमें कैसे–कैसे वैज्ञानिक तथ्य हैं– ऋगवेद 2.27.11 संख्या की ऋचा में क्या है– "न दक्षिणा विचिकिते न सव्या, न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा। पाक्याचित् वसवो धीर्याचित्, युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम्।। इसका अर्थ है– जो सूर्य न दायें, न बायें, न पूर्व और न पश्चिम दिशा में भ्रमण करता है, परन्तु जिसके आधार पर पृथ्वी आदि बसे हुए ग्रह–उपग्रह भ्रमण करते हैं और जिसके रहस्य को बुद्धिमान और धैर्यशाली श्रेष्ठजन ही जानते हैं, उनके द्वारा मैं भयरहित प्रकाशरूप ज्ञान को प्राप्त करूं।' इस ऋचा से यह साफ हो जाता है कि वैदिक काल के विद्वान यह अच्छी तरह से जानते थे कि सूर्यलोक में सूर्य केन्द्र में है और बाकी ग्रह–उपग्रह गुरूत्वाकर्षण की शक्ति से उसके इर्द–गिर्द भ्रमण करते थे।

यह तो आम लोग भी जानते हैं कि पश्चिम की सभ्यता वाले लोग अभी पांच सौ साल पहले तक, पृथ्वी को गोल या चपटी मानते थे और गुरूत्वाकर्षण की शक्ति क्या होती है, इन तथ्यों से अनभिज्ञ थे। और पृथ्वी को गोल मानने वाले और गुरूत्वाकर्षण की बात करने वालों ने मृत्युदंड तक झेले थे। वैज्ञानिक भी प्राणदंड से घबराकर यह मान लेते थे। वेद की आयु कम से कम 5000 साल पहले की है। यजुर्वेद की 18.40 ऋचा में कहा गया है कि चन्द्रमा का अपना प्रकाश नहीं होता वह सूर्य के प्रकाश को ही परावर्तित करता है। चन्द्रमा और तारागण भी रात में प्रकाश के एकमात्र स्रोत है। 'द्वादशारं नहि तज्जराय वर्विर्त चक्रं परि द्यामृतस्य। आ पुत्रा मिथुनासो अस्य सप्तशतानि विंशविश्च तस्थुरू।।' इसका अर्थ है–'परमात्मा द्वारा स्थापित काल के पहिये का बारह मास रूपी बारह अरों वाला चक्र निरन्तर सूर्य के चारों ओर घूम रहा है। इसमें दिन–रात के जोड़े रूप पुत्र सात सौ बीस विद्यमान रहते हैं, अर्थात् एक वर्ष में बारह महीने होते हैं और 360 दिन तथा 360 रातें मिलकर 720 अहोरात्र निरन्तर गति करते रहते हैं।' ऋगवेद 1.164.11 संख्या की ऋचा से यह पता चलता है कि ऋग्वैदिक लोग यह अच्छी तरह जानते थे कि पृथ्वी सूर्य का चक्कर लगाती है और उससे वह समय सेकेंड, मिनट, घन्टे, महीने और वर्ष की गणना कर सकते थे। जो संस्कृत नहीं जानते इस ऋचा में द्वादश शब्द का अर्थ बारह होता है यह तो समझ ही सकते हैं। और यह ग्रंथ कम से कम 5000 साल पुराना है।

आज भी वेदों को गड़ेरिये के गीत और आर्यों के भारत में बाहर से आने के सिद्धान्त हमारे पाठ्यक्रमों को प्रदूषित कर रहे हैं। अणुशक्ति के प्रथम साक्षात्कर्ता विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक 'अल्बर्ट आइंसटीन' ने कहा है कि 'भारतीयों का हम पर बहुत बड़ा ऋण है जिन्होंने हमें गिनना सिखाया, जिसके बिना कोई भी वैज्ञानिक प्रगति नहीं हो सकती थी।' भारत के मूर्धन्य वैज्ञानिक और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा है, 'वेद संसार के सबसे प्राचीन शास्त्र हैं और भारत का सबसे बड़ा मूल्यवान खजाना हैं। भारतीय संस्कृति की आत्मा

वेदों में वास करती है। सारा संसार आज वेदों की महत्ता को स्वीकार करता है।'

यहां तक कि पश्चिमी चकाचौंध और समाजवादी विचारों से प्रभावित जवाहर लाल नेहरू ने भी यह कबूल किया है– 'अगर मुझसे यह पूछा जाये कि भारत के पास सबसे बड़ा खजाना क्या है? उसके पास सबसे परिष्कृत धरोहर क्या है तो मैं यह निःसंकोच कहूंगा कि वह संस्कृत भाषा है, इसका साहित्य है और वह सब कुछ जो इस भाषा में भरा पड़ा है। यह भव्य धरोहर जब तक हमारे लोगों के जीवन को प्रभावित करती रहेगी तब तक भारतीय मेधाविता बनी रहेगी। अगर हमारी जाति बुद्ध, उपनिषद, रामायण और महाभारत को भूल जाती है तो भारत अस्तित्व में नहीं रहेगा।' और कितनी विडम्बनापूर्ण बात है कि उन्हीं जवाहर लाल नेहरू की पार्टी के शासन काल में औपनिवेशिक भारत की शिक्षा, स्वतंत्र होने के बाद भी न केवल चल रही है बल्कि मानसिक गुलामी और सांस्कृतिक संहार का सिलसिला आगे भी बढ़ाया जा रहा है।

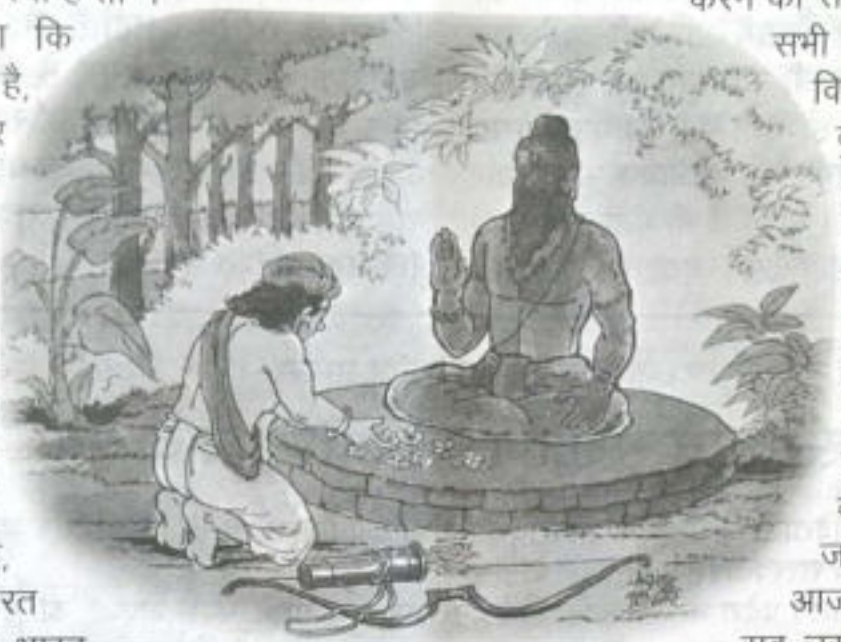

स्आर टीवी अपने दर्जनों चैनलों से पश्चिम के सांस्कृतिक हमले का संवाहक है। पश्चिम की संस्कृति में ये कुछ मूलभूत चारित्रिक विशेषताएं हैं। पूर्ण व्यक्तिवाद और पूरी स्वतंत्रता सभ्यता की दूसरी प्रस्थापना है कि जो सर्वश्रेष्ठ है वही बचेगा, बाकी सब पिटेंगे और काल कलवित हो जाएंगे। इसे अंग्रेजी में 'सर्वाइवल ऑफ फिटेस्ट' कहते हैं। सभी पश्चिमी अवधारणाओं में वैश्विक साम्राज्य की उत्कट आकांक्षा रही है। कुछ वर्षों पहले जब पोप भारत आए थे तब उन्होंने कहा था – पहली सहस्राब्दी में हमने यूरोप को जीता, दूसरी सहस्राब्दी में हमने दोनों अमेरिका, आस्ट्रेलिया और अफ्रीका को जीता, अब तीसरी सहस्राब्दी में हमें एशिया को जीतना है। इस्लाम में भी पूरे विश्व को अपने विस्तारवादी चरित्र से अल्लाह के हवाले करने की उत्कंट आकांक्षा और हिंसा हत्या का रास्ता है। यहां तक कि मार्क्सवादी विचार के प्रतिनिधि सोवियत संघ ने भी विश्वभर में साम्यवाद को प्रस्थापित करने का सपना देखा था। पश्चिम की सभी सेमेटिक मजहबों और विचारधाराओं की दुर्दान्त दुराकांक्षा वैश्वीकरण ही रही है। पश्चिमी सभ्यता यह भी मानती है कि वह सर्वश्रेष्ठ है और क्या श्रेष्ठ है, क्या श्रेष्ठ नहीं है यह सोचने का अधिकार भी जो श्रेष्ठ है उसी को है। जो श्रेष्ठ है ही नहीं वह क्या सोचेगा? आज हम जो वैश्वीकरण की जोर आजमाइश देख रहे हैं, वह सब उसी दिशा में है। पश्चिमी सभ्यता के वाहक 'स्टार' और 'सोनी' चैनल सबसे बड़े साधन हैं। आज उन्होंने भारत में एक होड़ पैदा कर दी है। भारतीय चैनलों को भी उनसे आर्थिक होड़ के लिए उतरना पड़ा है। इसीलिए हम देखते हैं कि चाहे श्स्टारश हो, 'सोनी' हो, 'जूम' हो, 'जी' हो या फिर कोई और चैनल हो यह सब उसी होड़ा–होड़ में जुटे हैं और पश्चिमी मूल्यों को स्थापित करने के लिए चाहे–अनचाहे पागल दौड़ में लगे हैं।

मीडिया को अगर पूर्णता में देखें तो मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि मीडिया पश्चिमी मूल्यों की प्रस्थापना का एक सघन वैश्विक प्रयास का हस्तक बन गया है। पश्चिम ने व्यक्तिवादी की तरफ ऐसी लम्बी छलांगें लगाई हैं कि आज न तो परिवार बच पा रहा है न तो समाज। समाज व्यक्तियों का समूह बन गया है। उसके बाद ऊपर फिर केवल सरकार है। परिवार टूटते जा रहे हैं। व्यक्तिवाद दृष्टिकोण के विस्फोट के कारण तलाक की परम्परा स्थापित हो गई है। केवल

बीस–पच्चीस प्रतिशत परिवार ही तलाक से अछूते हैं। 40 प्रतिशत बच्चे अकेले मां या अकेले पिता के साथ रहते हैं। बूढ़ों को देखने वाला कोई नहीं है। बूढ़े सरकार की पेंशन के हवाले हैं। बच्चे उन्हें पूछते नहीं। अच्छे बच्चे वे माने जाते हैं जो कभी–कभार डाक से शुभकामना संदेश भेज देते हैं। कभी किसी त्योहार पर उपहार दे आते हैं। ऐसे समाज को बनाने वाले अपने को सर्वश्रेष्ठ सभ्यता कहते हैं। जिसमें अतिरेकी व्यक्तिवाद और स्वछंदता तक जाने वाली स्वतंत्रता का बोलबाला है। स्त्रियों, का वस्तुकरण हो गया है। वह मात्र भोग्या बन गई है। उसके उपयोगी वर्ष आजीवन से घटकर आठ–दस साल रह गए हैं। भारत में भी मीडिया स्त्रियों को भोग्या बनाने की होड़ में लग गया है। अखबारी मीडिया भी और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भी। कम से कम वस्त्रों में मीडिया दर्शकों के सामने परोस देता है।

विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार अर्नाल्ड टायनबी ने लिखा है– 'हम अभी भी विश्व इतिहास के संक्रमण कालीन अध्याय में जी रहे हैं। लेकिन यह अभी से ही ज्ञात है कि यह अध्याय जिसकी पश्चिमी शुरुआत थी, उसका भारतीय अंत होगा, अगर तो मानव जाति आत्म विनाश के रास्ते पर नहीं है तो। हम मानव इतिहास में सर्वाधिक खतरनाक समय में जी रहे हैं। मानवता की मुक्ति का एक ही रास्ता है और वह है भारतीय रास्ता, अशोक और महात्मा गांधी का अहिंसा का सिद्धांत और रामकृष्ण परमहंस का धार्मिक सदभाव।'

(लेखक वरिश्ठ पत्रकार हैं)

अभाविष का तीन दिवसीय जनजाति छात्र व्यक्तित्व विकास शिविर सम्पन्न

संस्कृति संरक्षण को आगे आयें युवा

दुमका। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् का तीन दिवसीय जनजातीय छात्रों के लिए विशेष व्यक्तित्व विकास शिविर 23–25 जून 2012 स्थानीय सरस्वती शिशु मन्दिर में सम्पन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन प्रदेश के जनजाति कार्य प्रमुख प्रो नाथु गाड़ी, प्रदेश अध्यक्ष, डा. एस. एन. सिंह एवं प्रदेश संगठन मन्त्री सुमन कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलन कर तथा स्वामी विवेकानन्द व भारत माता के तस्वीर पर माल्यार्पण कर किया। इस अवसर पर नाथु गाड़ी ने कहा कि जनजातीय छात्रों को समाज का नेतृत्व करना चाहिए। उन्होंने जनजातीय समाज विकास व जनजाति संस्कृति के संरक्षण के लिए पढ़े–लिखे छात्रों को आगे आने का आवाहन किया। डॉ. सत्यनारायण सिंह ने बताया कि झारखण्ड प्रदेश जनजाति प्रदेश के रुप में जाना जाता है। यहां परिषद् के कार्य में स्वाभाविक रूप से जनजाति छात्रों का सहभाग रहता है। प्रदेश में जनजाति कार्य बढ़ाने के लिए प्रतिवर्ष ग्रीष्मावकाश में व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया जाता है। इस शिविर में भाग लेने के लिए रांची, चांदवा, दुमका, पाकुड़, गुमला आदि जिलों के छात्र–छात्रा प्रतिनिधि आयें हैं। तीन दिन चलने वाले शिविर में स्वास्थ्य, सामाजिक, शिक्षा, खेल आदि 15 विषयों का प्रशिक्षण दिया।

शिविर में परिषद् के अखिल भारतीय जनजाति कार्य प्रमुख प्रफुल्ल आकांत क्षेत्रीय जनजाति कार्यप्रमुख विकांत खण्डेलवाल, विनोबा भावे विश्वविद्यालय के उप कुलसचिव विजय कुमार सिंह ने छात्रों को नेतृत्व कुशलता, समय प्रबन्धन, कार्ययोजना, कॅरियर काउंसलिंग, प्रश्नोत्तरी, जनजाति शिक्षा एवं छात्र समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की।

विद्यार्थी परिषद् के जनजाति कार्य प्रमुख प्रफुल्ल आकांत ने कहा कि झारखण्ड में जनजाति वर्ग की आबादी बहुत है। अलग राज्य बनने के 12 वर्षों बाद भी इस वर्ग की स्थिति नही सुधारी जा सकी है जो बहुत ही चिंता की बात है। झारखण्ड में राजनैतिक बाजारीकरण से खासकर जनजाति समाज का खूब नुकसान हुआ है। यहां छात्रावासों का संचालन, छात्रों को छात्रवृति सहित अनेक मुद्दे को विद्यार्थी परिषद् द्वारा उठाया जायेगा। उन्होंने कहा – इस क्षेत्र की समस्याओं के कारण छात्रों को 12वीं क्लास के बाद विशेष कोचिंग के माध्यम से देश की प्रमुख प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवाना जरूरी है ताकि उनका चयन हो सकें। इस शिविर में परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय मन्त्री विमल मराण्डी, प्रदेश सहमन्त्री गुजन मराण्डी, कार्यक्रम प्रमुख विनोद इक्का, विभाग सगठन मन्त्री मनमीत अकेला व्यवस्था प्रमुख रवि कुमार, जय शंकर शर्मा आदि इस शिविर का समारोप भाषण क्षेत्रिय जनजाति कार्य प्रमुख विकांत खण्डेलवाल ने किया।

उत्तराखण्ड

छात्राओं में भारतीय परम्पराओं, संस्कारों को जागृत करता है विद्यार्थी परिषद

कोटद्वार। (29 जुलाई) अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् एक मात्र ऐसा छात्र संगठन है जिसने छात्र–छात्राओं के बीच राष्ट्रप्रेम की भावना विकसित की है। साथ ही छात्राओं में भारतीय परम्पराओं, संस्कारों को उत्पन्न करता है। हिन्दू धर्म में नारी को दैवीय स्थान प्राप्त है जिसने समाज की आवश्यकता के अनुसार ाज का मार्गदर्शन किया है। वर्तमान समय में भी छात्राओं को अपनी प्रतिभाओ, संस्कारों एवं ज्ञान के माध्यम से समाज को जागृत करने की आवश्यकता है। और यह कार्य विद्यार्थी परिषद् जैसे छात्र संगठन के जरिए ही संभव है। यह बातें पूर्व केन्द्रीय गृह राज्यमन्त्री स्वामी चिन्मयानंद महाराज ने परिषद द्वारा आयोजित छात्रा सम्मेलन को संबोधित करते हुए कही।

सिद्धबली बैंकट हाल कोटद्वार में आयोजित प्रदेश छात्रा सम्मेलन मे बतौर मुख्य वक्ता ममता यादव ने कहा कि अ.भा.वि.प. ने छात्राओं को समाज की वर्तमान परिस्थितिओं से अवगत कराया है। इसके कारण आज महिलायें राष्ट्रीय मंचों पर अपनी बात कहने में सक्षम हुई है। विद्यार्थी परिषद् के प्रयास के द्वारा छात्रायें समाज के प्रत्येक क्षेत्र, चाहे वह राजनीतिक हो, सामाजिक हो, व्यावसायिक हो, आध्यात्मिक हो, प्रत्येक ेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही हैं। परिषद् अपने रचनात्मक कार्यो के द्वारा छात्राओं के मध्य विशिष्ट पहचान बनाये हैं। आज छात्रायें विद्यालय से लेकर सड़कों तक प्रत्येक आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। ममता यादव ने कहा कि जब–तक इस देश की नारी शक्ति संगठित नहीं होगी तब–तक समाज में व्याप्त कुरीतियों का खात्मा नहीं किया जा सकता। उन्होंने शिक्षा के व्यापारीकरण, शुल्क वृद्धि, विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में व्याप्त शैक्षणिक अराजकता के विरोध में चल रहे आंदोलनों को प्रभावी बनाने हेतु छात्राओं का आह्वान किया।

परिषद द्वारा आयोजित सम्मेलन में आठ जिलों के पन्द्रह स्थानों से कुल 532 छात्रा प्रतिनिधियों ने प्रतिभाग किया, जिसमे 10 प्राध्यापिका प्रतिनिधि उपस्थित रहीं। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष अ.भा.वि.प. उम्मेद सिंह नेगी ने कहा कि विद्यार्थी परिषद् विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन है जिसने एक अनुशासित छात्र आंदोलन खड़ा किया है जो कि राष्ट्र के विकास में मुख्य भूमिका निभा रहा है।

कार्यक्रम अध्यक्ष सुधा जी सती ने अपने सम्बोधन में कहा कि विद्यार्थी परिषद् राष्ट्रीय पुर्ननिर्माण का ईश्वरीय कार्य कर रहा है। परिषद् छात्राओं में सक्रिय एक मात्र छात्र संगठन है जिसने अपने कार्यों के द्वारा छात्र–छात्राओं को अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया है।

सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित किया गया जो कि वर्तमान में महिलाओं की स्थिति एंव शिक्षा पर केन्द्रित था। इसमें पूरे देश में महिलाओं की विभिन्न समस्याओं की आंकड़ों के साथ जानकारी दी गई एवं महिला अधिकारों के प्रति जागरूकता पर जोर दिया गया जिसको चर्चा के बाद सर्वसम्मति से पारित किया गया।

प्रिय मित्रों,

ि ाक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्र ाक्ति' का अगस्त अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें विभिन्न सामसमायिक घटनाकमों तथा भ्रष्टाचार से संबंधित महत्वपूर्ण आलेखों एवं खबरों का संकलन किया गया है। आ ा है कि यह अंक आपकी आव यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा।

'राष्ट्रीय छात्र ाक्ति' से संबंधित अपने सुझाव और विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पत्ते अथवा ई – मेल पर अव य भेजें:–

''छात्रशक्ति भवन''
690 भूतल, गली नं. 21
फेज रोड, करोलबाग
नई दिल्ली - 110005
फोन : 011-43098248
ई-मेल : chhatrashakti.abvp@gmail.com
ब्लॉग : chhatrashaktiabvp.blogspot.com

हमारा विशाल अमर रहेगा!

✍ जे नन्द कुमार

हमारा विशाल क्रिटिकल केयर यूनिट में मृत्युशय्या पर लेटा हुआ है। शोकातुर सिसकियों नेकिरण की आवाज बंद कर दी है। यह आह्वान 16 जुलाई के विनाशक दिन की देर रात में चेंगन्नूर जिला प्रचारक, किरण ने किया। मैंने चेंगन्नूर के पास कॉलेज परिसर में विद्यार्थियों की लड़ाई के समाचार की झलकी देखी, परंतु कॉलेज के शुरुआती दिनों के दौरन इस प्रकार की प्रतिदिन की घटनाओं को अधिक महत्व नहीं दिया। बाद में मुझे इस घटना की विस्तृत जानकारी देर रात किरण से मिली। यह कैम्पस फ्रंट के गुंडों द्वारा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं पर सुनियोजित हमला था। कैम्पस फ्रंट कुख्यात पॉपुलर फ्रंट का एक विद्यार्थी स्कन्ध है। पॉपुलर फ्रंट प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन सिमि (एसआईएमआई) का पुनर्जन्म है। विशाल वेणुगोपाल अभाविप के नगर समिति सदस्य तथा संघ के शारीरिक शिक्षण प्रमुख थे। वे अपने साथियों के साथ क्रिश्चियन कॉलेज में कॉलेज इकाई द्वारा नए विद्यार्थियों के स्वागत कार्यक्रम के आयोजन के निरीक्षक थे। केम्पस फ्रंट के तीन या चार कार्यकर्ता भी वहाँ थे। रात के 11 बजे तक सब कुछ ठीक–ठाक चला। अचानक मुस्लिम गुंडों का एक दल बाहर से कॉलेज द्वार की ओर आया तथा अ०भा०वि०प० एवं सरस्वती देवी को गालियां देने लगा। विशाल और अन्य कार्यकर्ताओं ने उन्हें कार्यक्रम में गड़बड़ी फैलाने से रोकने का प्रयास किया। वे उन घुसपैठ करने वालों के मंसूबों को नहीं जानते थे। अचानक उन गुंडों ने छुरों, आधुनिक चाकुओं तथा अन्य घातक हथियारों से परिषद के कार्यकर्ताओं पर हमला बोल दिया। विशाल, विष्णु और श्रीजीत काफी घायल हुए। गंभीर रूप से घायल विशाल ने 17 तारीख की भोर में दम तोड़ दिया। दो अन्य कार्यकर्ता अब भी गहन चिकित्सा कक्ष में हैं। यह कोई अकेली घटना नहीं है। हाल ही में ऐसी अनेक घटनाएँ हुई हैं। पॉपुलर फ्रंट काफी लंबे समय से राज्य में आतंक फैलाने की योजना बना रहा है और यह खतरनाक घटना उनकी सुनियोजित रणनीति का एक हिस्सा है।

अपनी नियोजित रीति अनुसार सघन प्रशिक्षण द्वारा पॉपुलर फ्रंट ने अपने अभीष्ट पीड़ित की हत्या की।

दूसरे दिन केरल राज्य सरकार ने उच्च न्यायालय को सूचित किया कि पॉपुलर फ्रंट के सिमि के साथ संबंध हैं और यह राज्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के 27 कार्यकर्ताओं की हत्याओं का जिम्मेदार है। दिनांक 4 जुलाई 2010 को पॉपुलर फ्रंट और इसके राजनैतिक स्कन्ध सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया (एसडीपीआई) के कार्यकर्ताओं ने प्रोफेसर टी जे जोसेफ का दायाँ हाथ तालिबानी हमले में काट दिया। इसका कारण ? जोसफ को वह प्रश्नपत्र बनाने के लिए आरोपी ठहराया गया जिसमें पैगंबर मोहम्मद की निंदा की गई थी। एनआईए इस मामले को देख रही है। पीएफआई न्यायालय ने उसे दोषी पाया है और अंगछेदन की सजा पारित की है।

विशाल को लक्ष्य बनाया गया

विशाल, संघ का एक वचनबद्ध युवा कार्यकर्ता था। उसने अपने गाँव में संघ कार्य को मजबूत किया और आस–पास के गांवों मे नई शाखाएँ भी शुरू कीं। वे अपने अनवरत संपर्क और अभियान से इस्लामी कट्टरवादियों के षडयंत्रों के बारे में हिंदुओं को सावधान करते रहते थे। वे अपने क्षेत्र में एवं आसपास भी अनेक प्रेम जिहाद प्रयासों पर निगरानी रखने वालों में से थे। जिहादी कई प्रकार से ग्रामीण जीवन की शांति को भंग करने का प्रयास कर रहे थे। हिन्दू युवाओं को अनेक प्रकार से प्रलोभित करना, उन्हें समाज विरोधी गतिविधियों जैसे नशे एवं अवैध व्यापार में लगाए रखना, उनमें से एक थे। विशाल अन्य गांववालों की मदद से हस्तक्षेप किया करते थे और ऐसे प्रयासों को सफलतापूर्वक मात देते थे। इसके अलावा उन्होंने परिसर में आतंकवादियों से सम्बद्ध बढ़ते सांप्रदायिक खतरे के विरुद्ध साहसी अभियान चलाया। इस युवा कार्यकर्ता को लक्ष्य बनाने के लिए आतंकवादियों के पास ये पर्याप्त कारण थे। किसी जिहादी न्यायालय ने आँख की इस किरकिरी को हमेशा के लिए समाप्त करने का आदेश दिया और उन नृशंस हत्यारों ने उस डिक्री को लागू किया।

समर्पित व्यक्तित्व

संघ की विचारधारा के महान लक्ष्य के प्रति विशाल का समर्पण एवं निष्ठा सच्चे अर्थों में अनुकरणीय थी। उन्होंने संघ और संघ के माध्यम से राष्ट्र के लिए जीवन जिया, कार्य किया एवं अध्ययन किया। वे यथाशीघ्र प्रचारक बनना चाहते थे। ऐसा लगता है वे हमेशा जल्दी में रहते थे। यही कारण है कि प्रतिभावान विद्यार्थी होते हुए भी 2 की पढ़ाई छोड़ना चाहते थे। तथापि संघ अधिकारियों ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। उन्होंने स्वाभाविक रूप से तत्काल अपनी पढ़ाई कम से कम स्नातकोत्तर स्तर तक जारी रखने के लिए कहा। उन्होंने ऐसा करने का प्रण लिया परंतु उस समय यह एक कठिन कार्य था क्योंकि परीक्षा के लिए केवल 45 दिन शेष थे। विशाल अगले वर्ष की प्रतीक्षा नहीं कर सकता था। इसलिए उन्होंने 45 दिन तक दिन–रात अध्ययन करके सभी लंबित अध्यायों को पूरा किया और शानदार सफलता अर्जित की। फिर उन्होंने बी.एस.सी. इलेक्ट्रॉनिक्स के लिए कोन्नी कॉलेज में प्रवेश लिया।

मूल की खोज में

उनका जीवन इतिहास विचित्र था। उनका जन्म सऊदी अरब में हुआ और शुरुआती पढ़ाई लंदन में की। परंतु वहाँ की भौतिकवादी जीवन शैली उनके कोमल हृदय को रास नहीं आई। वे अपना खाली समय आधुनिक कल्पनाओं के बजाय अपने भारतीय मूल, संस्कृति, हमारी पवित्र भाषा संस्कृत और पावन धर्मग्रंथों को इंटरनेट पर ढूँढने में बिताते थे। युवा विशाल ने हमारी संस्कृति एवं विरासत के कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित करने की शपथ ली थी। उन्होंनेअपने अंतहीन लक्ष्य से पाया कि रा. स्व. सं. ही एकमात्र ऐसा संगठन है जिसके माध्यम से वे अपने सपने पूरे कर सकते हैं। इसलिए उन्होंने अपने अभिभावकों से भारत जाकर रहने की अनुमति का निवेदन किया ताकि वे अनुकूल परिवेश में पढ़ सकें और संघ के माध्यम से राष्ट्र के लिए कार्य कर सकें। उनके अभिभावकों ने इस

विचित्र इच्छा के लिए उन्हें रोका परंतु सब व्यर्थ गया। वे अड़े हुए थे, अंततः अभिभावकों को उनकी इच्छा के आगे झुकना पड़ा। इस प्रकार वे भारत आ गए और राष्ट्र के लिए अपना दूसरा जीवन प्रारम्भ किया। अभिभावक बहुत अधिक समय तक उनका बिछोह सहन नहीं कर सके, उन्हें ब्रिटेन वापस लाने के अनेक प्रयास किए। उन्होंने हाथ जोड़कर बड़े आदरपूर्वक भारत में ही रहने देने की अनुमति की उनसे याचना की। उनके पिता वेणुगोपाल स्मरण करते हैं कि "मेरा बेटा अपनी माँ से कहा करता था कि हमारी वृद्धावस्था में वह हम दोनों की सेवा नहीं कर सकेगा। इससे उसकी माँ को बहुत कष्ट होता था। जब वे कहतीं कि वह ऐसा क्यों कह रहा है, तो उसका उत्तर हमारे लिए बिलकुल अविश्वासनीय होता था"। शोकसंतृप्त पिता ने बताया।

"विशाल ने कहा कि यदि भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और स्वामी विवेकानंद जैसे महान देशभक्तों ने अपने परिवारों के बारे में सोचा होता या उनके साथ रह रहे होते, तो क्या हम स्वतन्त्रता प्राप्त कर पाते? उनके वचन और कर्म उस आयु के लड़के की सीमा से कहीं परे थे। एक बार उसे पता चला कि उसका एक मित्र धनाभाव के कारण उच्चतर शिक्षा के लिए प्रवेश नहीं ले पा रहा था। विशाल को अपनी नई मोटरबाइक बेचने के लिए दूसरी बार सोचना भी नहीं पड़ा और वह पैसा उस मित्र को दे दिया। विशाल, निर्धन पृष्ठभूमि के 4 विद्यार्थियों को उनकी पढ़ाई जारी रखने के लिए सहायता करते थे।"

त्याग हमारी राष्ट्रीय मान्यता है

15 जुलाई को उन्होंने पास की शाखा में गुरुपूजा उत्सव में भाग लिया। जिहादी आतंकियों द्वारा उन पर किए गए घातक हमले से 24 घंटे पूर्व ही वे विद्यार्थियों को प्रेरणादायक बौद्धिक दे रहे थे। वे बता रहे थे कि त्याग हमारे राष्ट्र का अति स्वाभाविक गुण है। हिन्दू केवल उन्हीं लोगों को याद रखते हैं, जिन्होंने अपना सर्वस्व ही राष्ट्र को अर्पित कर दिया हो। उस शाखा के जिन स्वयंसेवकों ने वह सुगठित बौद्धिक सुना वे अब भी उस बौद्धिक के प्रत्येक शब्द को याद कर रहे हैं। उनकी अंत्येष्टि पर हजारों लोग इकट्ठे हुए। उनके माता–पिता ब्रिटेन से यहाँ आए। अनियंत्रित दुख एवं अदम्य विरोध के भाव सर्वत्र व्याप्त थे। अन्त्येष्टि के पश्चात, अभिभावकों ने उनके बड़े बेटे द्वारा मद्धम स्वर में गाया गाना सुना, उनके बड़े भाई, विपिन चिता के पास खड़े थे। उनके दोनों अभिभावकों ने उन्हें डांटते हुए कहा, "इस स्थिति में यहाँ खड़े–खड़े गाने की क्या सूझी। क्या यह तुम्हारा भाई नहीं है जो चिता पर राख में विलीन हो रहा है?"बिलखते हुए विपिन ने सिसक कर जवाब दिया "पिताजी यह कोई दूसरा गाना नहीं। ये पंक्तियाँ मेरे प्यारे विशाल ने मुझे सिखाई थीं– जीवितम अम्बे निन पूज्यक्काय, मरणम देवी निन महिमायकाय–(ओ माँ यह जीवन आपकी सेवा के लिए है, और मृत्यु, ओ देवी आपकी महानता तक)।

यह उनका पसंदीदा गणगीतम था, इसलिए मैंने यह गाया। अब से मैं इस गाने के भाव के अनुसार जीऊँगा।"

दो दिन बाद प्रांतीय संघ कार्यकर्ता घर पधारे। विशाल के बारे में बताते हुए उनके पिता ने यह स्वीकारते हुए कहा "हम संघ के समर्थक नहीं हैं। वस्तुतः मैं वामपंथी था। परंतु अब मेरे पुत्र ने अपने जीवन और समर्पण से मेरा जीवन समग्र रूप से बदल दिया है। उसके अनुसार जो कुछ भी उसका था, वह राष्ट्र का था और हम भी हमारे प्यारे विशाल द्वारा दिखाए मार्ग पर चलकर संघ के लिए कार्य करेंगे।

इससे एक उदात्त सत्य उद्घाटित होता है। कोई भी राष्ट्र विरोधी ताकत संघ द्वारा प्रदीप्त सच्ची भावना को दबा नहीं सकती। इस्लामी आतंकी इस प्रकार के जघन्य अपराधों द्वारा परिवारों में भय की मनोवृति उत्पन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। परंतु वे विशाल के परिवार के सदस्यों, सहकार्यकर्ताओं और शांतिप्रिय समाज के मजबूत इरादों के समक्ष विफल हुए हैं।

विशाल गए नहीं हैं। वे संघ में अपने भाइयों के रूप में हमारे बीच जीवित हैं। इस राष्ट्र तथा हिन्दू समाज की निस्वार्थ सेवा का संदेश और अधिक मजबूत हुआ है। जिस उद्देश्य को लेकर वे आगे बढ़े उसके प्रति हमारे निस्वार्थ त्याग द्वारा ही उनकी स्मृति को सम्मान मिलेगा। हम देखेंगे कि एक विशाल के बदले जिहादियों को हजार का सामना करना पड़ेगा।

परिवर्तन हेतु छात्रशक्ति

"स्व. बाल आपटे जी जहां अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की विकास यात्रा के साक्षी थे वहीं छात्र आंदोलन के दर्शन को गढ़ने में उनका अप्रतिम योगदान था। १९६८ में मुंबई में हुए ४४ वें राष्ट्रीय अधिवेशन को संबोधित करते हुए श्री आपटे ने एक ओर छात्र आंदोलन की अर्धशती का सिंहावलोकन किया वहीं आने वाले वर्षों में होने वाली घटनाओं की ओर इंगित किया। यह परिषद् की सीपना का स्वर्ण जयंती वर्ष था। आपटे जी का वह भाषण आज भी प्रसांगिक है। साथ ही, उनके व्यक्तित्व की एक झलक भी देता है। वर्तमान पीढ़ी के परिषद् कार्यकर्ताओं के लिए यह संगठन को समझ सकने में सहायक होगा वहीं पुरानी पीढ़ी के कार्यकर्ताओं में उन स्मृतियों को एक बार पुनः जी सकने का अवसर देगा।"

आज यहां अपने इस सुवर्ण जयंती वर्श के अधिवे ान में य ावंतराव केलकर नगर के प्रांगण में यह जो दत्ताजी डिडोलकर सभागृह हमने खड़ा किया है उसमें आप सबको संबोधित करते हुए गत 35 वर्शों की इन दो महानुभावों की स्मृतियां मन आकुल करती है। विद्यार्थी परिशद् का आज का जो आचार, विचार, व्यवहार, निरंतर विकास है, इन सब पर दत्ता जी और य ावंतराव जी की मुहर लगी है। इसलिए आज विद्यार्थी परिशद् जब अगली भाताब्दी की ओर देख रही है तब प्रारंभ में इन दोनों को अभिवादन करना मेरे लिए स्वाभाविक है।

मैंने कहा कि जो भी आज हम हैं उस पर इन दोनों की मुहर लगी है। वे दोनों आज हममें नहीं है, इस बात को ग्यारह साल हो गए इसलिए किसी को लगेगा कि क्या आज हम उसी स्थिति में रहने वाले हैं। अर्थ वास्तव में उल्टा है। मेरे कहने का मतलब है कि निरंतर परिवर्तन का विद्यार्थी परिशद् (वि. प.) का जो स्वभाव है वह उनके कारण उत्पन्न हुआ है। इस दृश्टि से परिवर्तन का हमारा आग्रह उन दोनों के विचारों की मुहर है।

स्वर्ण जयंती का यह अधिवे ान 44वां अधिवे ान है। इनमें से 5 अधिवे ान मुंबई में हुए। सबसे पहला अधिवे ान 1959 में यहां हुआ। उसके बाद का दूसरा अधिवे ान मुंबई में हुआ 1965 में, 350 कार्यकर्ता रहे। उसकी पृश्ठभूमि थी, पाकिस्तान के साथ संघर्श में भारत की विजय की। कार्यकर्ता घोशणा दे रहे थे–"जीत लिया भाई जीत लिया, लाहौर हमनें जीत लिया।" इसे हमने Defence Oriented Conference कहा था। उस समय की वि व की रचना में भारत ने किया वह ठीक किया, ऐसा कहने वाला एकमेव दे ा था मलें िया। उस दे ा के भारत में राजदूत को हमने अधिवे ान में वि ोश अतिथि के रूप में बुलाया था। यहां बताया गया है कि इस समारोह के अंतर्गत अगले वर्श जुलाई में हम अपने सब पड़ोसी दे ाों के छात्रों की परिशद् करने जा रहे हैं। एक तरह से इस परिशद् के विचार का प्रारंभ 1965 में जब मलें िया के राजदूत अपने अधिवे ान में आये तब हुआ है।

उसके बाद का अधिवे ान रजत जयंती अधिवे ान 1974 में मुंबई में हुआ। तब तक का सबसे बड़ा यह अधिवे ान रहा। 6,000 से अधिक छात्र–छात्राएं उसमें सम्मिलित हुए। नानी पालखीवाला ने उसका उद्घाटन किया। वह अधिवे ान हमने ऐसे मोड़ पर किया जब दे ा की छात्र ाक्ति एक नवीन दि ाा में बढ़ रही थी। वि. प. ने ऐलान कर दिया था 1970–71 में आज का छात्र, कल का नहीं, आज का

नागरिक है। राष्ट्रीय जीवन के सभी प्र नों में उसकी भूमिका सिर्फ सहभोगी की नहीं है, सहभागी की है। He has a participatory role to play in national life of the country. छात्रसंघों में वि. प. के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में चुनकर आते रहे हैं। 1973 के अहमदाबाद में हुए अधिवे ान में सभी कार्यकर्ताओं ने आकर तय किया था कि विद्यार्थियों के प्र न जो Laboratory और Labotory में अटके हुए हैं उनको हम राष्ट्रीय जीवन का परिसर देंगे। महंगाई, बेरोजगारी, भ्रश्टाचार के प्र नों में छात्र अग्रसर कदम उठाएंगे। गुजरात में नवनिर्माण आंदोलन की भुरूवात हो रही थी तब वि. प. ने बिहार में छात्र संघों को एकत्रित करते हुए एक नवीन आंदोलन का सूत्रपात किया। आगे चलकर यह जनआंदोलन में परिवर्तित हुआ। उसमें जयप्रका ा नारायण जी भाामिल हुए। उनके व्यक्तित्व के कारण आज यह जे. पी. आंदोलन के नाम से इतिहास में लिखा गया है। उस वातावरण में वि.प. का रजत जयंती का अधिवे ान हुआ।

छात्र ाक्ति जब इस दे ा के जीवन में निर्णायक भूमिका का वहन करने की स्थिति में आयी थी, तब यह अधिवे ान हुआ। वि.प. ने उसमें दो बातें कही, जिन्होंने छात्र आंदोलन की दि ाा निि चत की। एक बात स्पश्ट की – हम पढ़ाई के साथ लड़ाई करेंगे। संघर्श भुरू हुआ सत्ता से जो सर्वंक ा ताना ााही की ओर जा रही थी। लेकिन सत्ता से संघर्श करते हुए वि. प. ने आग्रह से कहा था – 'राज नहीं समाज बदलना है।' समाज में बुनियादी परिवर्तन की आव यकता है। उसके बाद आपात स्थिति आई। 10,000 छात्र कारागृह में गए। इस दे ा में कांति हो गई, लोकतंत्र विजयी हो गया। उसका सूत्रपात रजत जयंती अधिवे ान में हुआ था। मैंने कहा ताना ााही खत्म हो गई, परिवर्तन का वातावरण निर्माण हुआ तब वि.प. ने कहा कि अब वहां एक अविरोध भाासन काम कर रहा है तो हम अधिक सुविधा से, अधिक निश्ठा से अपने समाज परिवर्तन के काम में लग जाएंगे। हमने एक अभियान भुरू किया 'ग्रामोत्थान हेतु छात्र'। 1978 के राश्ट्रीय कार्यकारी परिशद् में यह विशय रखा। दो बातें हुई। एक तो जो हमने सोचा था उतना हुआ नहीं, हमको लगा था कि सत्ता परिवर्तन हुआ था पर ध्यान में आया कि सत्ता परिवर्तन से कुछ बदला नहीं है। पूरी जनता के ध्यान में आया। इसलिए सत्ता फिर से पलट गई। ऐसी स्थिति में फिर कुंठा उत्पन्न हुई। 1980 में इंदिरा गांधी फिर सत्ता में आई। 1984 में उनकी हत्या हुई और अभूतपूर्व बहुमत से राजीव गांधी पंतप्रधान बने। और लगा कि अब राजीव गांधी यानि दे ा, परिवर्तन। एक अलग प्रकार का सत्ता का चित्र उत्पन्न हुआ। लोग हतप्रभ हो गए।

1985 युवा वर्श मनाया जा रहा था। हमने भी उसके दरम्यान एक वि ााल अधिवे ान का दिल्ली में आयोजन किया था। 10,000 से अधिक छात्र वहां आए। इंदिरा गांधी की हत्या के बाद दे ा में विघटन का वातावरण निर्माण हुआ। एकात्मता की भावना स्वाभाविक रूप से लोगों के मन में थी। उसके प्रति प्रतीक के रूप में उन्होंने राजीव गांधी को चुना। अन्य दल न के बराबर हो गए। इस दे ा में राश्ट्रवाद विजयी हुआ। 1985 में वि. प. ने कहा कि इस तरह से परिवर्तन आने वाला नहीं। छात्रों को सत्ता के सामने एक आहवान उत्पन्न करना होगा। Political Contention खड़ा करना होगा। राश्ट्रीय जीवन के विविध अंगों को लेकर छात्रों को संगठित करने का अपना प्रयास जारी रखना चाहिए। आप सबको मालूम है कि इस परिवर्तन के आग्रह के कारण सामाजिक जीवन कुंठित करने वाले प्र नों के हम तला ा में थे। राश्ट्रीय सुरक्षा से खिलवाड़ करने वाला एक भ्रश्टाचार सामने आया। इसके विरोध में वि.प. ने एक जनआंदोलन 1986, 87, 88 में उत्पन्न करने का प्रयास किया। मुंबई में वि.प. का चौथा अधिवे ान इस पृश्ठभूमि में हुआ। सत्ता परिवर्तन का जो लगातार चक रहा तब यह कहा गया कि आज दे ा में व्यवस्था के बारे में परिवर्तन का प्र न उठाने की आव यकता है। अब समय आया है दे ा में व्यवस्था परिवर्तन की बहस उत्पन्न करने का। तब तक जो नौकर ााही, भाासनतंत्र या कुछ मान्यताएं उत्पन्न हुई थीं जो एक दृश्टि से Holy Cow जैसी थी। उनके बारे में कुछ कहना अपराध था। एक वि ाि श्ट प्रकार का समाजवाद लोकतंत्र Secularism, Non-alignment इनका मिलकर ढांचा बना था। इस Nehruvian Consensus के साथ राश्ट्रवादी ताकतों

की लड़ाई छिड़ चुकी थी। व्यवस्था परिवर्तन का प्रारंभ होना चाहिए ऐसे आग्रह था। एक दृश्टि से इसमें से अयोध्या का आंदोलन खड़ा हुआ। क्या कहा इस आंदोलन ने? इस दे ा की एक राश्ट्रीय संस्कृति, परंपरा, विरासत है और उसको अपमानित करने वाली कोई चेश्टा हमें पसंद नहीं। अगर श्रीरामजन्म भूमि पर कोई मस्जिद का ढांचा खड़ा है तो यह इस दे ा का अपमान था। यह एक राश्ट्रीय अस्मिता का जागरण है। उसके प्रकटीकरण का एक व्यापक जनआंदोलन भारू हो गया। जिसका एक पड़ाव 6 दिसंबर, 1992 में आया। विवादित ढांचे के साथ Nehruvian Consensus का ढांचा भी ढह गया। विचार परिवर्तन, व्यवस्था परिवर्तन का मार्ग प्र ास्त हो गया। इस दे ा की परंपरा, विचार को नकारने की गलती को दुरूस्त करने का काम भारू हो गया।

वि.प. ने इस व्यवस्था परिवर्तन का विचार करते समय 1990 के द ाक में इसके बारे में सोचा था। इन वर्शों में छात्र आंदोलन के दो रूप लेने की आव यकता है। एक रूप है जीवन में उत्पन्न होने वाले सभी मुददों पर व्यापक आंदोलन, जनजागरण हो। साथ में जहां तक कैंपस जीवन का सवाल है, परिसर में रहकर समाज का विकास होना आव यक है। इसलिए राश्ट्रीय संघर्श का विचार करते हुए विद्यार्थी की सभी प्रतिभाओं को विकसित करके दे ा के विकास का नया मॉडल तैयार करने में अपना योगदान करें। Students for Development का जन्म इसी विचार से हुआ है।

आज का इतिहास भी आपको मालूम है। क मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारत की एकता Non-Negotiable है यह कहने के लिए हमने संघर्श खड़ा किया। 10,000 छात्र जम्मू–ऊधमपुर पहुंचे। मैं हमे ा कहता हूं कि दे ा की सुरक्षा के बारे में गलत कदम उठाने की क्षमता, सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर करने की क्षमता किसी भी भासन में नहीं है क्योंकि उसके खिलाफ जनता है। जनता यह सहन नहीं करेगी। समझौते करने वाला इस दे ा में भासन में रह नहीं सकता, इस बात की गारंटी है। आज मुंबई में होनेवाला यह पांचवां अधिवे ान है। इतनी बड़ी संख्या में एक विचार लेकर कार्यकर्ता एकत्रित हुए हैं। वि. प. ने आज तक क्या किया और आगे जाकर क्या करना है इसका विचार करने के लिए राश्ट्रीय पुनर्निर्माण में अपनी प्रतिबद्धता को पुनः प्रतिपादित करने के लिए।

छात्र ाक्ति केवल एक समूह नहीं, उसमें एक चेतना है, और यह चेतना एक ऐसी भाक्ति है जो हर प्रकार का परिवर्तन ला सकती है, यह समाज को बताने के लिए हम एकत्रित हुए हैं। आज की स्थितियों में दे ा में एक राजनीतिक, सामाजिक संघर्श की स्थिति है। राश्ट्रीय सुरक्षा आज भी चिंता का विशय है। राश्ट्रवाद जो आज दे ा में Central Stage पर आ पहूंचा है, उसके दु मन जो गलत विचार रखते आए हैं। उनसे वैचारिक संघर्श की चुनौती हैं। सामाजिक जीवन में चुनौतियां है। उनका सामना करते हुए आगे के कुछ वर्शों का हमें विचार करना है। इन चुनौतियों का सामना हम कर सकेंगे या नहीं, इस प्रकार के अनि चय की आज स्थिति है।

इस अनि चय में दुनिया भर में परिवर्तन हुए हैं, उनका भी हिस्सा है। मैंने कहा कि इस द ाक में ऐसा वातावरण बना कि अपने इतिहास के साथ नाते का एहसास इस दे ा की जनता को हुआ। उसमें से राश्ट्रवादी विचार सभी क्षेत्रों में प्रभावी होते हुए आज राश्ट्रीय रंगमंच पर Central Stage पर खडा है। दुनिया में हम कौन है इस प्र न का उत्तर हर समाज ढूंढ़ रहा है। और उसके कारण Communism के पतन के बाद Soviet Union का विघटन हुआ। इस प्र न के उत्तर की खोज में Soviet Union के दे ा अलग हो गए। अपनी राश्ट्रीय अस्मिता को लेकर खड़े हुए। यूगोस्लाविया और चेकोस्लावाकिया विघटित हो गए। एक राश्ट्रीय समाज के रूप में हम कौन है, इस प्र न

का उत्तर ढूंढने में संपूर्ण दुनिया लगी है।

इसके साथ भायद nuclear weapons के कारण दुनिया में इस प्रकार के military आकमण के दिन खत्म हुए हैं। लेकिन साम्राज्यवाद खत्म नहीं हुआ है। औरों का भोशण करने की तृश्णा खत्म नहीं हो रही है। एक नवीन साम्राज्यवाद उत्पन्न होने जा रहा है Economic Imperialism. वह चाहता है कि हम सुस्थिति में रहें। औरों का भोशण हो। यह भोशण हम अंतर्राश्ट्रीय धरातल पर विविध agreements करके करेंगे। आर्थिक मदद का दबाव उत्पन्न करेंगे। जैसे War is politics by other means होती है। वैसे यह imperialism by other means है। चर्चा चल रही है स्वदे ाी की। जार्ज फर्नांडीज ने कहा कि स्वदे ाी का मतलब है दे ाभक्ति। आज जो खतरा उत्पन्न हुआ है – Globalisation, Market economy, WTO का वह अपनी आर्थिक स्वाधीनता पर है। यह एक नवीन प्रकार का साम्राज्यवाद है। भविश्य में एक निर्णायक रूप लेगा।

1973 से 1977 तक एक छात्र आंदोलन उभरा। इस दे ा में परिवर्तन के बारे में एक कुंठा उत्पन्न हो गई। कुछ भी हो, सत्ता वाले सत्ता में रहने वाले है। परिवर्तन की कोई गुंजाइ ा नहीं। छात्र अग्रसर हुआ। सत्ता परिवर्तन हुआ। उसके बाद 20 वर्शों में निर्णायक संघर्श छात्र ने किया नहीं। प्र न पूछा जाता है–क्या दे ा के छात्र की संघर्श ाीलता खत्म हो गई? दे ा के छात्र की Mobilisation की क्षमता खत्म हो गई? कहा गया we must revive the spirit of 1977. 1974 का आंदोलन अलग था। 1992, 93, 94 में इस दे ा के University जीवन में अद्वितीय आंदोलन हुए। हजारों छात्र अपनी भौक्षिक मांगों को लेकर भांतिपूर्ण आंदोलन के लिए खड़े हुए। मुंबई में 1,30,000 छात्र आए, बंग्लोर में 85,000 आए। आंदोलन होता है लेकिन 74 का spirit उसमें नहीं है। उसका मेरे हिसाब से कारण है।

जब समाज मानस में कुंठा होती है revolution होता है। 1973–74 के बाद समाज में वह कुंठा नहीं है। वि.प. कहती रही राज नहीं समाज बदलना है लेकिन समाज समझता रहा राज बदलेगा तो परिवर्तन होगा। और समाज ने राज बदला। 1977 के बाद हर चुनाव में जो सत्ता में थे उनको उखाड़ फेंक दिया है समाज ने। जब समाज को इस ताकत का एहसास होता है, उसको लगता है मैं कुंठित नहीं हूं।। have my power, I can exercise it. इन 20 वर्शों में 1977 जैसा निर्णायक संघर्ष इस देश के छात्र को लड़ना होगा। इस लड़ाई का संबंध सत्ता से नहीं उसके निर्णयों से है। निर्णय लेने की क्षमता सत्ता में नहीं है। एक Process 1991 में शुरू हुआ और कहा गया – It is irreversible. समाज के लिए irreversible कुछ नहीं है। समाज के लिए आवश्यक कानून बनाने के लिए एक निर्णायक लड़ाई लड़ने का समय आने वाला है।

एक और चुनौती छात्रों के सामने आने वाले वर्शों में खड़ी होने वाली है। वह चुनौती Imperialism by other means जैसी है। कई देशों में कानून है कि उस देश का Natural Citizen ही उस पर राज कर सकता है। अपने देश में वह कानून आज तक नहीं है। इसलिए ऐसा एक अलग प्रकार का, जिसका इस देश के परंपरा से कोई संबंध नहीं, ऐसा शासन अपने देश में उत्पन्न होने की आशंका है। In the absence of another alternative, एक नवीन सत्ता का आवाहन आने वाले वर्शों में इस देश के सामने खड़ा होने की संभावना है। इसका उत्तर political process में नहीं है, छात्र आंदोलन में है। उसके बारे में कल वि.प. को, इस देश के छात्र समुदाय को सोचना पड़ेगा। लेकिन वि.प. साल भर जो कार्यकम चलाती है वह आंदोलन के लिए शक्ति संचय करने के लिए नहीं है।

हम शिक्षा में बुनियादी परिवर्तन लाना चाहते हैं। कल सार्वजनिक सभा में नाना पाटेकर ने कहा कि वह कोई राजकीय संगठन नहीं है। यहां का छात्र अपने खर्च से आया है। यदि यह परिवर्तन लाना है तो किसी आंदोलन की प्रतीक्षा की आवश्यकता नहीं हैं।

अपनी साल भर की गतिविधियों में एक नवीनता लाकर, परिसर संस्कृति की स्थापना करनी है। क्या है परिसर संस्कृति? इसका सीधा मतलब है महाविद्यालयों के प्रांगण विद्यार्थियों के लिए है। वहां विद्यार्थी पढ़ें, उसकी विभिन्न प्रतिभाओं का विकास हो। इस विकास के लिए आवश्यक माध्यम न हो तो ऐसे माध्यम उत्पन्न करें। विद्यार्थी अपनी शिक्षा, अपना

पाठ्यक्रम पूरा करते हुए अपनी कला, कीडा, साहित्य, सामाजिक प्रतिबद्धता के विचार के लिए कियाशील रहे। महाविद्यालय यदि 180 दिन चलना चाहिए तो यह उसका कम 365 दिन चलना चाहिए। इसके लिए अभाविप है। कैंपस के छात्रों की प्रतिभा का विकास करने का काम हमें अधिक तेजी से, संपूर्णता से संपूर्ण वर्ष भर करना है क्योंकि उनमें से उत्पन्न होने वाली प्रतिभाएं कल जाकर इस देश का नेतृत्व करने वाली हैं। वास्तव में समाज को नेतृत्व देना है तो हर क्षेत्र में नेतृत्व देने वालों की प्रतिभाओं का संपूर्ण विकास इस छात्र जीवन में ही होना है। यह करने का दायित्व हम भूलेंगे तो हम कोई परिवर्तन लाने की क्षमता नहीं रखेंगे। क्योंकि हम जो कहने वाले हैं वो करने वाले हैं इसलिए कैंपस का विचार हमें करना होगा।

इस देश में हम आर्थिक साम्राज्यवाद की बात करते हैं। हम कहते हैं जो भी आर्थिक विकास होने वाला है उसका एक मॉडल विकसित होने की आवश्यकता है। यह विकास का मॉडल कैसा हो, इसका प्रयोग छात्र जीवन से होने की आवश्यकता है। हमारा महाविद्यालय वहां की कम्यूनिटी के साथ रिश्ता उत्पन्न करते हुए उसे क्षेत्र के आर्थिक विकास के लिए क्या हो सकता है ऐसा प्रयोग छात्र जीवन से शुरू करें तो इसमें से ही कल हमने जिनका गौरव किया ऐसे सैकड़ों अनिल मेहता उत्पन्न हो सकते हैं। इसके लिए एक्टीविटी का प्रारंभ हमारे छात्र जीवन से हीं हो। जिस प्रश्न का उत्तर इस देश का समाज ढूंढ़ रहा है उस प्रश्न के उत्तर में कुछ समय, कुछ चिंतन लगाने की जरूरत है।

हम कौन हैं? इस प्रश्न के उत्तर के साथ परिवर्तन के लिए हम कुछ भी कर सकते हैं इसका आत्मविश्वास। वी. एस. नायपाल ने भारत के बारे में कई किताबें लिखी है। वे मूल भारतीय हैं। एक खून का नाता इस भूमि से। उन्होंने कहा आर. के. नारायणन. ने उनसे 1961 में कहा था कि सब प्राकर की अराजकता के, सब प्रकार के अशिक्षा, गरीबी के बावजूद यह देश चलता रहेगा। हिन्दुस्तान में कोई विघटन नहीं है, कोई पतन नहीं है, हिन्दुस्तान आगे चलेगा हीं। वे बाद में 1974 में और 1977 में आए और उनका कहना है India will go on उन्होंने यहां के समाज का जो अध्ययन किया है उसमें उन्हें लगता है कि कोइ इस समाज के स्वाभाविक रहने पर अंकुश नहीं लगा सकता, कोई भी इस समाज को अपनी दिशा में ले नहीं जा सकता। अपनी दिशा में ले जाने के प्रयास बहुत हुए, इस देश का westernisation करने के प्रयास हुए। हमारे देश में 150 वर्ष पहले अंधेरा था। अब अगर कुछ नया करना है तो पश्चिम से उधार लेने की अवश्यकता है। यह एक दृष्टि से इस देश की विचारधारा बनी, तो भी उनका जो विश्वास लगता है क्या वह विश्वास हमारे मन में है? इसका उत्तर हमें देना पड़ेगा। यह विश्वास केवल 'वंदे–मातरम्' या 'भारत माता की जय' कहने से उत्पन्न होने वाला नहीं है। हमें जो स्वाभाविक रूप से लगता है उसका प्रकटीकरण "वंदे मातरम्" में हैं "भारत माता की जय" में है। हमें यह लगना चाहिए कि हम यह कर सकते हैं। यह ए. पी. जे. अब्दुल कलाम को लगा। यह सुपर कंप्यूटर उत्पन्न करने वाले भाटकर को लगा। इसलिए सभी प्रकार की प्रतिकूलताओं के बावजूद यह देश दुनिया के सामने खड़ा है।

इराक पर अमेरिका का हमला हो रहा है। सद्दाम कितना भी बुरा हो, एक राष्ट्र के नाते इराक की अस्मिता है। इराक मरा नहीं है। हिन्दुस्तान और इराक की तुलना ही नहीं है। इराक पर हमला करने का साहस अमेरिका कर रहा है, हिन्दुस्तान पर हमला करने का साहस अमेरिका नहीं कर सकता। India is not Iraq आने वाले दिनों में जो परिवर्तन की व्यापक लड़ाई उत्पन्न होने वाली हैं, उसमें हम शरीक होने की क्षमता रखेंगे।

हमें अपने कैंपसों में अपनी साल भर की गतिविधियां चलाने के लिए विकल्प नहीं है। दूसरा–यह गतिविधि चलाते समय किस प्रकार का अर्थिक परिवर्तन इस देश में चाहिए, किस प्रकार की आर्थिक संचरना इस देश में चाहिए इसके अनुकूल जो भी विकास का विचार है उसके अनुकूल प्रयोग हमें अपने महाविद्यालयीन जीवन से शुरू करने पड़ेंगें जिनमें से अनिल मेहता उत्पन्न होंगे। तीसरा – एक व्यापक राष्ट्रीय संघर्ष इस देश में खड़ा होगा। जिसका नेतृत्व छात्रों को करना पड़ेगा और उस समय जो भी चीज आड़े आएगी, हमें उसके साथ संघर्ष करना पड़ेगा। पूर्व विदेश सचिव जे.

एन. दीक्षित लिखते हैं – सैनिक संघर्ष और सभ्यताओं के संघर्ष का सवाल नहीं है, मुसलमान, किश्चियन के कारण जो संघर्ष होंगे उनकी चर्चा की आवश्यकता नहीं है। आज अंतर्राष्ट्रीय संबंधों मं अंतर्राष्ट्रीय एग्रीमेंट के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय पैसे के दबाव पर एक जो नवीन प्रकार का साम्राज्यवाद आने वाला है उसके बारे में सजग रहने की आवश्यकता है। यह जो साम्राज्यवाद आएगा वह सत्ता में कौन है, इस पर निर्भर नहीं रहेगा। जो करार हुए हैं, वो जो अंतर्राष्ट्रीय पैसे के साथ आने वाले प्रतिबंध हैं, वो जो हमें बांध सकते हैं, हमेशा के लिए गुलाम कर सकते हैं। उन स्ट्रिंग्स के साथ संघर्ष है और यदि यह संघर्ष है तो यह पूरा होगा। यह निर्णायक होगा।

आपको मालूम है एक बार एक सर्पसत्र इस देश में चला। शत्रु रहने वाले सर्पों का जो संहार हुआ उसमें जब तक्षक की बारी आई और तक्षक की आहुती के लिए जब मंत्र आए, तक्षक भयभीत हुआ। भयभीत होकर सर्वशक्तिमान इन्द्र के पीछे जाकर छिपा। इंद्र ने उसको अभय दिया। सर्प सत्र करने वालों के जब ध्यान आया कि तक्षक को इंद्र अभय दे रहा है तो उन्हों केवल तक्षकाय स्वाहा नहीं कहा, इंद्राय तक्षकाय स्वाहा कहा। हमारे खिलाफ जो भी आएंगे उन सबके सामने

जम्मू-कश्मीर पर वार्ताकारों की रिपोर्ट के खिलाफ प्रदर्शन

जम्मू। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के सदस्यों ने जम्मू–कश्मीर पर वार्ताकारों की रिपोर्ट के खिलाफ प्रदर्शन किया। एबीवीपी के सदस्यों ने शहर के कच्ची छावनी चौक पर रिपोर्ट की कापियां भी जलाई।

अभाविप ने कहा कि केंद्रीय वार्ताकारों ने कश्मीर मसले पर जो रिपोर्ट सौंपी है, उससे मसले का कोई हल नहीं निकलेगा बल्कि इससे स्थिति और पेचीदा हो जाएगी। रिपोर्ट की सिफारिशें साफ तौर पर बता रही हैं कि वार्ताकारों ने राष्ट्रविरोधी ताकतों और अलगाववादियों को खुश करने का प्रयास किया है। जब तक वार्ताकारों की यह रिपोर्ट खारिज नहीं होती, अभाविप का विरोध जारी रहेगा।

परिषद के राज्य सचिव राघव शर्मा का कहना था कि वार्ताकारों ने कश्मीर केंद्रित रिपोर्ट तैयार कर अलगाववादियों को खुश करने का प्रयास किया है। यह रिपोर्ट किसी भी तरह से जम्मू के लोगों के हित में नहीं है। उन्होंने इस रिपोर्ट को अलगाववाद के एजेंडे पर तैयार करने का वार्ताकारों पर आरोप लगाया। परिषद के सदस्यों ने केंद्र सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि अगर इस रिपोर्ट पर अमल कर इसे लागू करने का प्रयास किया गया तो इसके अंजाम बेहतर नहीं होंगे। सदस्यों ने इस रिपोर्ट को तुरंत खारिज करने की केंद्र सरकार से मांग की।

बांग्लादेशी मुसलमानों के बहाने की जा रही देशघाती राजनीति

✍ डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

पिछले कुछ दिनों से असम में, विशेषकर बोड़ो क्षेत्रीय परिषद के अधिकार क्षेत्र में आने वाले चार जिलों कोकराझार, बाकसा, उदालगुड़ी, चिरांग में असमिया लोगों और बंगला देश से अवैध घुसपैठ करने वाले मुसलमानों में भंयकर टकराव हो रहा है। इस टकराव में सरकारी आंकड़ों के हिसाब से ही लगभग पचास लोगों की मृत्यु हो चुकी है जिनमें महिलाएं और बच्चें भी शामिल है और चार लाख से भी उपर लोग अपने घरों को छोड़कर भाग गए हैं। वे सहायता शिविरों में रह रहे हैं। हजारों घरों को जला दिया गया है और करोड़ों की सम्पत्ति स्वाहा हो गई है।

बोड़ो क्षेत्रिय परिषद के दो जिलों मसलन कोकराझार और चिरांग में तो स्थिति बहुत ही भयावह है। असमिया लोगों और बंगलादेशी घुसपैठियों की लड़ाई अब धुबड़ी इत्यादि जिलों को पार करके बोंगाईगांव और बरपेटा इत्यादि क्षेत्रों में फैलने लगी है। जहाँ तक असम सरकार का प्रश्न है उसके लिए यह कोई महत्वपूर्ण प्रश्न नहीं है। असम के मुख्यमंत्री तरूण गोगोई दावा कर रहे हैं कि स्थिति नियंत्रण में आ चुकी है लेकिन शायद अन्दर ही अन्दर सुलग रहे दावानल तो महसूस नहीं कर रहे। या फिर महसूस तो कर रहे हैं लेकिन जानबूझ कर अनजान बने हुए हैं।

असम के लोगों को गुस्सा तरूण गोगोई पर इसलिए भी है कि पिछले विधान सभा चुनावों में जब सभी बंगलादेशी मुसलमान बदरूददीन अजमल की ए. यू.डी.एफ. पार्टी के झण्डे तले लामबंद्ध हो गए थे तो असम की हिन्दू जनता ने तरूण गोगोई की सरकार को जिताया था। लेकिन अब वही तरूण गोगोई अपने आगामी राजनैतिक हितों को पुनः पारिभाषित करते हुए अवैध बंगलादेशी मुसलिम घुसपैठियों के प्रति नरम रवैया अपना रहें हैं और उन्हें असम के लोगों की कीमत पर बसाने का प्रयास कर रहे हैं। दरअसल, असम 1947 से ही मुसलिम लीग के निशाने पर रहा है और मुसलिम लीग इसे भारत विभाजन की योजना के अन्तर्गत पाकिस्तान में शामिल करवाना चाहती थी।

इसे मुसलिम लीग और अंग्रेज सरकार की सांझी योजना भी कहा जा सकता था। 1905 में जब अंग्रेज सरकार ने बंगाल का विभाजन किया और मुस्लिम बहुल पूर्वी बंगाल को अलग कर दिया तो पूरे बंगाल ने एकजुट होकर इसका विरोध किया था। अंग्रेजों ने तभी से पूर्वी बंगाल के साथ लगते असम के क्षेत्र को बंगाली मुसलमानों से भरने का निर्णय कर लिया था। असम में बंगाली मुसलमानों के बसने का यह सिलसिला 1930 तक निरन्तर चलता रहा। यही कारण था कि आसाम का सिलहट इत्यादि क्षेत्र मुस्लिम बहुल हो गया।

आजादी से पहले जो अन्तरिम सरकारें बनी थी उसमें असम के तकालिक मुख्य मंत्री गोपीनाथ बारदोलोई के त्यागपत्र देने पर मुस्लिम लीग के मुहम्मद सादुल्लाह मुख्य मंत्री बने थे। उन्होंने इन बंगाली मुसलमानों को जमीन के स्थाई पट्टे दे दिए। मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मुहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान में शामिल किए जाने वाले जिन क्षेत्रों का मानचित्र इंगलैण्ड की सरकार को दिया था उस मानचित्र में पूरे का पूरा बंगाल और असम का अधिकांश भाग शामिल था। डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी की सूझ–बूझ के कारण पश्चिमी बंगाल पाकिस्तान में शामिल होने से बच गया और गोपीनाथ बारदोलोई के प्रयासों से असम। लेकिन इसके बावजूद असम का सिलहट क्षेत्र अंग्रेज सरकार ने पाकिस्तान में शामिल कर दिया।

भारत विभाजन के बाद भी मुस्लिम लीग और पाकिस्तान सरकार ने पूरे असम को पाकिस्तान में शामिल करवाने का अपना एजेण्डा त्यागा नहीं। बंगलादेश जब पाकिस्तान से अलग हो गया तो पाकिस्तान की आई.एस.आई. के लिए असम को मुस्लिम बहुल बनाकर उसे हिन्दुस्तान से तोड़ने का एक और

रास्ता मिल गया। बंगलादेश बनने के बाद लाखों की संख्या में अवैध बंगलादेशी मुस्लिम घुसपैठिए हिन्दुस्तान में आने लगे और उनमें से अधिकांश असम में स्थाई रूप से बसने लगे। यह ठीक है कि इन बंगलादेशी घुसपैठियों ने अपने बिस्तार के लिए सारे हिन्दुस्तान को ही अपना निशाना बनाया। एक मोटे अनुमान के अनुसार हिन्दुस्तान में बसे अवैध बंगलादेशी घुसपैठियों की संख्या चार करोड़ के लगभग है। जबकि संयुक्त राष्ट्र संघ के अनेक सदस्य देशों की आबादी चार करोड़ से कहीं कम है।

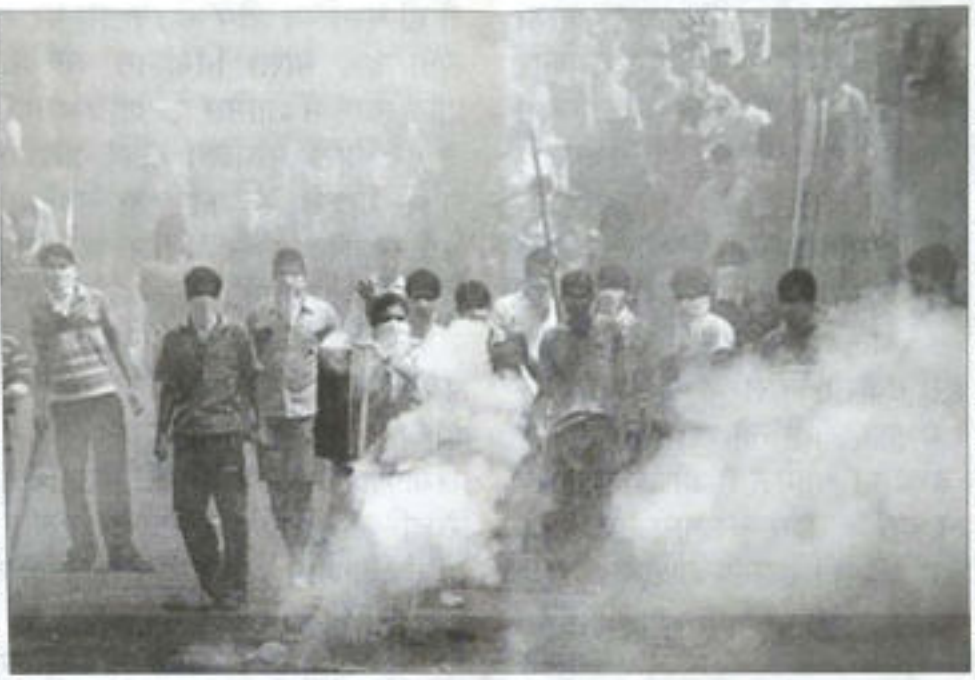

आज दिल्ली, कोलकाता जैसे शहरों में लाखों की संख्या में अवैध बंगलादेशी घुसपैठिए मिल जाएंगे लेकिन अब उनका विस्तार छोटे–छोटे शहरों तक में भी हो गया है। पूर्वोत्तर भारत में तो वे गांवों तक पहुंच गए है। मेघालय, त्रिपुरा और असम उनके विशेष शिकार हुए हैं। दुख की बात यह है कि ये बंगलादेशी घुसपैठिए अपराध कर्म में तो लिप्त हो ही रहें हैं, इनकी मानसिकता भारत विरोधी है और अनेक स्थानों पर आतंकवादी गतिविधियों में भी इनकी संलिप्तता पाई गई है।

भारत के अनेक स्थानों पर जो आतंकवादी विस्फोट हुए हैं उनकी जांच में कई बंगलादेशी भी संदेह के घेरे में हैं। पूर्वोत्तर भारत में आई.एस.आई. की गतिविधियों को बढ़ावा देने में संलिप्त लोगों की शरणस्थली भी बंगलादेश रही है। दुर्भाग्य से इन बंगलादेशियों को इस देश में, खासकर असम में, स्थाई रूप से बसाने में और उन्हें जरूरी कानूनी कागजात मुहैया करवाने में पश्चिमी बंगाल की पूर्ववर्ती सी.पी.एम. सरकार और असम की सोनिया कांग्रेस सरकार की महत्पूर्ण भूमिका रही है।

बंगलदेशी अवैध घुसपैठियों के कारण असम में जो जनसांख्यिकी परिवर्तन आ रहा है उस पर गुवाहाटी उच्च न्यायाल्य और उच्चतम न्यायालय भी अनेक बार चिन्ता प्रकट कर चुका है। न्यायालय ने केन्द्र सरकार को ऐसे आदेश भी दिए हैं कि अवैध बंगलादेशियों की शिनाख्त करके उन्हें तुरन्त देश से बाहर निकाला जाए। लेकिन सी.पी.एम. और सोनिया कांग्रेस दोनों के ही राजनैतिक हित इन बंगलादेशियों से जुड़ गए हैं, इसलिए कानून का निर्धारण इस प्रकार किया गया जिससे कानूनी प्रक्रिया में किसी अवैध बंगलादेशी को इस देश से निकालना लगभग असम्भव हो जाए। केन्द्र सरकार का आई.एम.डी.टी. एक्ट ऐसा ही कानून था, जिसे बाद में उच्तम न्यायालय ने निरस्त किया।

शुरू–शुरू में जब बंगलादेशी मुसलमानों ने असम में डेरा जमाना शुरू किया था और सोनिया कांग्रेस ने खुशी–खुशी उन्हें मतदाता सूचियों में दर्ज कराना शुरू किया था तो ये नये मतदाता सोनिया कांग्रेस को ही मत देते थे और असम की सोनिया कांग्रेस सरकार इन नये बढ़ते मतों के उत्साह में बंगलादेशियों को निकालने के वजाए उन्हें और अधिक संख्या में असम में बसाने के प्रयास कर रही थी। अब जब इन बंगलादेशी मुस्लिम घुसपैठियों की संख्या अनेक जिलों और विधानसभा क्षेत्रों में निर्णायक स्थिति में पहुंच चुकी है तो उन्होंने अपनी ही एक राजनैतिक पार्टी ए.यू.डी.एफ. असम यूनाईटेड डैमोक्रेटिक फ्रंट बना

ली हैं और पिछले विधान सभा चुनाव में 18 सीटें प्राप्त करके वह मुख्य विपक्षी दल बनने की स्थिति में आ गई हैं। इन दिनों, क्योंकि दिल्ली में देश की सबसे कमजोर, दिशाहीन और निर्णय लेने में अक्षम सरकार काबिज है जो सत्ता की खातिर मुसलमानों के तुष्टीकरण में लगी हुई है। इसलिये आइ.एस.आई. और अवैध बंगलादेशी घुसपैठियों को लेकर लम्बी रणनीति चलाने वालों ने असम में अपनी रणनीति का पहला प्रयोग करने का निर्णय कर लिया है। असम के कोकराझार, चिरांग, धुबड़ी और दूसरों जिलों में जो हो रहा है वह उसी प्रयोग का प्रतिफल है। यह रणनीति इतनी गहरी है कि ज्यों ही असम में असमिया लोगों और अवैध बंगलादेशी मुसलमानों का टकराव शुरू हुआ त्यों ही दिल्ली में केन्द्रिय सरकार पर दबाव बनाने के लिए मुसलमानों ने, जिनमें से अधिकांश अवैध बंगलादेशी ही थे असम भवन और केन्द्रिय गृह मंत्री के घर के बाहर यह कहते हुए प्रदर्शन करने शुरू कर दिए कि असम में मुसलमानों पर अत्याचार हो रहा है जबकि असलियत यह है कि असम में यह झगड़ा असमिया लोगों और अवैध बंगलादेशी घुसपैठियों में है न कि असम के हिन्दू और मुसलमानों में। केन्द्रिय सरकार, और अभी भी मुस्लिम लीग की रणनीति को मन में पाले हुए कुछ नेता इसे हिन्दू मुस्लिम दंगों का रूप देने की कोशिश कर रहे हैं। रणनीति बिल्कुल साफ है यदि इसे हिन्दू मुसलिम दंगे का नाम दे दिया जाए तो विदेशी पैसों पर पल रही तमाम एन. जी. ओ. हिन्दुओं के खिलाफ मोर्चा खोल सकती है। लेकिन यदि यह झगड़ा असम के लोगों और अवैध बंगलादेशी घुसपैठियों के बीच है तो तथाकथित सैक्युलरिस्टों के लिये अवैध बंगलादेशियों का समर्थन करना मुश्किल हो जाएगा।

बोडोलैण्ड क्षेत्रीय परिषद के मुखिया ने बार–बार केन्द्र सरकार और असम सरकार से मांग कि भारत और बंगलादेश की सीमा को तुरन्त सील किया जाए क्योंकि दंगों का लाभ उठाकर बहुत से बंगलादेशी मुसलमान सरहद पार से असम में घुस रहे हैं और जलती आग में घी का काम कर रहे हैं। यह मांग भी की गई कि धुबड़ी और कोकराझार की सीमा को भी सील किया जाये क्योंकि धुबड़ी से अवैध बंगलादेशी घुसपैठिए कोकराझार में घुसकर स्थिति को खराब कर रहे हैं लेकिन असम सरकार के कानों पर जूं नही रेंगी। असम में स्थिति कितनी खराब हो चुकी है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि मेघालय के राज्यपाल रणजीत शेखर ने भी सार्वजनिक रूप से यह कहा कि असम सरकार स्थिति पर नियंत्रण रखने में सफल हुई है। उन्हें यह तब कहना पड़ा जब उन्हें अपने ही गांव के मूल निवासियों को खदेड़ दिया गया।

लेकिन असम के कुछ हल्कों में बोड़ो क्षेत्र में हुए इन दंगों को लेकर प्रचारित किए जा रहे आंकड़े भी विवाद का विषय बने हुए हैं। सरकारी प्रचार माध्यम यह दावा कर रहे हैं कि इन दंगों में लगभग पॉच लाख लोग विस्थापित हुए हैं। बोड़ो साहित्य सभा का कहना है कि जिस जिले से अवैध बंगलादेशी घूसपैठिए शरणार्थी कैंपों में गये है उस कोकराझार जिले में मुसलमानों की कुल जनसंख्या ही दो लाख है। इन दो लाख में भी अवैध बंगलादेशी मुसलमानों के अतिरिक्त असम के मूल मुस्लिम भी हैं। यदि यह भी मान लिया जाए कि कोकराझार जिले के सभी मुसलमान भाग कर शरणार्थी कैंपो में चले गये हैं तभी भी उनकी संख्या पांच लाख कैसे हो सकती है। ऐसा कहा जा रहा है कि बंगलादेश से बहुत से अवैध मुसलमान आ रहे हैं और अब वे अपने आप को इन राहत कैंपों में पनाह लेने वालों में शामिल करके सरकारी सहायता से ही असम में अवैध रूप से बस जायेंगे।

असम के तटस्थ विश्लेषक यह मानते हैं कि पूनर्वास की व्यवस्था उन्हीं के लिए की जाए जो असमीया मुसलमान है। बंगलादेशी मुसलमानों की शिनाख्त करके उन्हें वापिस बंगलादेश भेजा जाये। लेकिन लगता है असम की सोनिया कांग्रेस सरकार इस त्रासदी का भी राजनैतिक लाभ उठाना चाहती है। यही कारण है कि इस दंगों के नाम पर नये आने वाले बंगलादेशी मुसलमानों को बसाने के प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने और कहीं वह जन दबाव के चलते बंगलादेशी मुसलमानों की शिनाख्त करना शुरू न कर दे, शायद इसी को टालने के लिए ईस्लामी आतंकवादी समूहों ने गोपालपाड़ा में भारतीय सेना पर भी आक्रमण किया। मुस्लिम यूनाईटेड

लिबरेशन ऑफ असम ने भी सरकार पर बंगलादेशियों घुसपैठियों को सरकारी सहायता से बसाने का दबाव डालना शुरू कर दिया है।

सोनिया कांग्रेस के सबसे बड़े सिपहसलार दिग्विजय सिंह जिसको सोनिया गांधी ने असम का इंचार्ज बनाया हुआ है ने स्पष्ट किया कि असम में बंगलादेशी अवैध मुस्लिम घुसपैठिए नहीं है बल्कि ये यहाँ के मूल मुस्लिम समुदाय से ही तालुक रखते हैं। जब उनसे प्रश्न किया गया कि यदि अवैध बंगलादेशी मुस्लिम घुसपैठिए आसाम में नहीं आ रहे हैं तो पिछले कुछ दशकों से असम में मुसलमानों की संख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि कैसे हुई है? इसके उत्तर में दिग्विजय ने जो कहा वह शायद कांग्रेस वालों को भी चौंकाने के लिए काफी हो। उन्होंने कहा कि असम में भी मुसलमानों की जनसंख्या में उसी दर से वृद्धि हुई है जिस दर से भारत के अन्य प्रान्तों में। इसलिए असम में मुसलिम जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि पर शोर मचाना बेकार है। दिग्विजय सिंह का दंगों के अवसर पर दिया गया यह ब्यान काफी चतुराई भरा है। उनके इस ब्यान का अर्थ है कि दंगों की आड़ में नये आने वाले बंगलादेशी मुसलमानों को, या फिर ऐसे बंगलादेशी मुसलमानों को जो काफी अर्से से असम में रह रहे हैं लेकिन उनके पास स्थाई निवासी होने के कागज पत्र नहीं है, को सरकारी सहायता पर बसा दिया जाए और उनके नाम मतदाता सूचियों में दर्ज करवा दिए जायें।

असम में असली स्थिति यह है कि विधानसभा के कुल 126 क्षेत्रों में से 56 क्षेत्र ऐसे बन गये हैं, जहाँ चुनाव में वही विधायक जीत सकता है जिसका समर्थन बंगलादेशी मुसलमान करेंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि सत्ताधारी सोनिया कांग्रेस का समर्थन पाकर एक दिन बंगलादेशी मुसलमान राज्य के शासन के सूत्रधार भी बन सकते हैं। बंगलादेशी मुसलमानों की राजनीति करने वाले राजनैतिक दल असम यूनाईटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट के मालिक बदरूददीन अजमल ने सोनिया कांग्रेस की इस सत्ता लिप्सा को आसानी से पहचान लिया। उसने बंगलादेशी मुसलमानों के दम पर विधानसभा की 18 सीटों पर कब्जा करके बंगलादेशी मुसलमानों की ताकत का भी एहसास करवा दिया और असम की तरूण गोगोई सरकार का समर्थन करना भी शुरू कर दिया ताकि कांग्रेस इसी लालच में प्रदेश में अपनी बंगलादेशी घुसपैठियों को समर्थन देने की नीति जारी रख सके। शायद यही कारण है कि आज जब असमिया लोगों और अवैध विदेशी बंगलादेशियों के बीच में झगड़ा हुआ तो सरकारी प्रशासन बंगलादेशियों के पक्ष में खड़ा दिखाई देता है न कि असम के लोगों के पक्ष में।

स्थिति यहां तक खराब हो गई है कि असमिया स्वयं को असम में ही बेगाने महसूस कर रहे हैं। अस्सी के दशक में इस स्थिति को बदलने के लिए और असम को अवैध बंगलादेशी मुसलमानों से मुक्त करवाने के लिए असम के छात्रों ने बेमिसाल अहिंसक आन्दोलन चलाया था। उससे प्रान्त की सरकार भी बदली परन्तु केन्द्रीय सरकार की नीतियों, अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्रों और मुसलिम लीग की 1947 की रणनीति को साकार करने में लगी घर की भेदी शक्तियों के सम्मिलित प्रयासों ने असम के लोगों की इस लड़ाई को एक बार फिर पराजित कर दिया। कांग्रेस इस लड़ाई में असम के लोगों के साथ इसलिए न खड़ी हो सकी क्योंकि उसे सत्ता में रहने के लिए बंगलादेशी मुसलमानों के मतों की जरूरत थी और ये नये मतदाता इसके लिए सहर्ष तैयार थे।

यदि बाबा साहब आम्बेडकर के शब्दों की नव व्याख्या करनी हो तो मुस्लिम ब्लॉक को असम में बंगलादेशी मुसलमानों को बसाने की इसलिए जरूरत थी ताकि पूर्वोत्तर भारत को देश से अलग किया जा सके। आज भी जब लड़ाई का असली केन्द्र असम ही है तब भी बंगलादेशी मुसलमानों के आधार पर असम का जनसंख्या चरित्र परिवर्तित करने के लिए इन शक्तियों ने अपनी सहायता के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में भी बंगलादेशी मुसलमानों की पिकटें तैयार कर ली हैं ताकि भविष्य में दबाव बनाने के लिए काम आए। इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि असम में अभी जो दंगा–फसाद हुआ है, तरूण गोगोई सरकार इसका उपयोग और भी ज्यादा बंगलादेशियों को असम में बसाकर करने जा रही है।

(लेखक नवोत्थान लेख सेवा, हिन्दुस्थान समाचार के कार्यकारी संपादक हैं)

पटना छात्रा सम्मेलन में संकल्प लेती छात्राएं

कर्नाटक में डिप्लोमा कैरीऑवर विषय में आंदोलन करते कार्यकर्ता

RNI No. 32464/78

Con. No. - DL(N)/249/10-12

गुवाहाटी में असम हिंसा के विरोध में बाईक रैली निकालते कार्यकर्ता

प्रयाग में जनजाति छात्रों को पुरस्कृत करते हुए